INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

UPSC – CSE

(संघ लोक सेवा आयोग)

(हिंदी माध्यम)

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 3

आधुनिक भारत का इतिहास

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**UPSC-CSE (IAS/IPS/IFS) (हिंदी माध्यम)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **संघ लोक सेवा आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"सिविल सेवा परीक्षा (प्रारंभिक एवं मुख्य)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp कीजिए - https://wa.link/6bx90g

Online Order कीजिए - https://shorturl.at/SgSVX

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	उत्तर – मुगलकाल • मुगल साम्राज्य का पतन • क्षेत्रीय राज्यों और यूरोपीय शक्तियों का उदय	1
2.	शिवाजी के उत्तराधिकारी	7
3.	यूरोपियों का आगमन • भारत में पुर्तगाली • भारत में डच • भारत में अंग्रेज़ • भारत में फ्रांसीसी • भारत में डेनिश	9
4.	भारत की ब्रिटिश विजय • बंगाल पर विजय - प्लासी का युद्ध, बक्सर का युद्ध • मैसूर पर विजय - एंग्लो-मैसूर युद्ध (1799) • मराठों के साथ संघर्ष- एंग्लो-मराठा युद्ध • ब्रिटिश शक्ति का सुदृढ़ीकरण - सिंध की विजय, पंजाब की विजय	20
5.	क्षेत्रीय राज्यों का उदय	30
6.	संवैधानिक विकास • संवैधानिक विकास - ईस्ट इंडिया कंपनी शासन (1773 - 1857) • शासन का तंत्र • भारतीय सिविल सेवा अधिनियम, 1861 • वैधानिक सिविल सेवा, 1878-79 • कांग्रेस मांग और एटचिसन समिति • मॉन्टफोर्ड सुधार (1919) • भारत सरकार अधिनियम, 1935	34
7.	आधुनिकता के संस्थान - शिक्षा और प्रेस	46
8.	भारत में अनुपयुक्त ब्रिटिश शासन	57
9.	भूमि राजस्व नीतियाँ और कृषक वर्ग की निर्धनता • ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण	60
10.	औद्योगिकीकरण, विदेशी पूंजी और आधुनिक उद्योग • औद्योगीकरण का ह्रास • विदेशी पूंजी • आधुनिक उद्योगों का विकास	72

	• आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय • धन का निकास • आर्थिक राष्ट्रवाद से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की ओर	
11.	1857 से पहले का लोकप्रिय प्रतिरोध • जनप्रिय प्रतिरोध का सामान्य स्वरूप • विद्रोह के कारण • कंपनी की नीतियों के परिणाम • 18वीं और 19वीं शताब्दी में जनविद्रोह • राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन • गद्दी से हटाए गए सरदारों और ज़मींदारों द्वारा विद्रोह • अपदस्थ शासकों के उत्तराधिकारियों द्वारा आंदोलन • जनजातीय आंदोलन	86
12.	1857 का विद्रोह	103
13.	1857 के बाद जन प्रतिरोध	116
14.	सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन • भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि • 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव • भारत में सांस्कृतिक जागृति के कारण • सामाजिक सुधारक • सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आंदोलन • सिख समाज में धार्मिक-सामाजिक सुधार • अन्य सुधारक या सुधार आंदोलन	126
15.	1858 के बाद भारतीय प्रशासन में बदलाव	154
16.	भारतीय राष्ट्रवाद की कहानी	155
17.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	161
18.	लॉर्ड क्रॉस का अधिनियम या भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 • भारतीय परिषद अधिनियम 1892 के प्रावधान • अधिनियम की विशेषताएँ • भारतीय परिषद अधिनियम 1892 का मूल्यांकन	169
19.	हिंदू पुनरुत्थानवाद और भारतीय राष्ट्रवाद पर इसका प्रभाव • हिंदू पुनरुत्थान की शुरुआत	171

	• रामकृष्ण मिशन • विवेकानंद • थियोसॉफ़िकल आंदोलन • ईश्वरचंद्र विद्यासागर • विभिन्न क्षेत्रीय और संबंधित संगठन • भारतवर्षीय आर्य धर्म प्रचारिणी सभा और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की भूमिका • उग्र राष्ट्रवाद के लिए उत्तरदायी कारक • गौ रक्षा आंदोलन • कूका विद्रोह • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की भूमिका • हिंदी-उर्दू विवाद • पुनरुत्थानवाद का राष्ट्रवाद पर प्रभाव • आधुनिक 'हिंदू धर्म' की उत्पत्ति	
20.	उग्रवाद का उदय	180
21.	स्वदेशी आंदोलन और सूरत विभाजन	184
22.	सीमित स्वशासन	190
23.	महात्मा का आगमन - गांधी से पहले का भारत • संघर्ष का उदारवादी चरण • निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण • सत्याग्रह बनाम पंजीकरण प्रमाणपत्रों के खिलाफ आंदोलन • प्रथम विश्व युद्ध के बाद की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और गांधी युग की शुरुआत • होम रूल लीग आंदोलन का गांधीवादी राजनीति में योगदान • सत्याग्रह का युग : चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद • भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का उदय • चंपारण सत्याग्रह • अहमदाबाद मिल मज़दूर हड़ताल • खेड़ा सत्याग्रह	193
24.	जन आंदोलन के साथ गांधीवादी प्रयोग • तुर्क साम्राज्य (ऑटोमन साम्राज्य) में अत्याचार • खिलाफत आंदोलन • असहयोग आंदोलन • चौरी-चौरा कांड • मोपला विद्रोह	202

	• 1918-1922 के बीच अन्य महत्वपूर्ण विद्रोह	
25.	सविनय अवज्ञा की तैयारी • निष्क्रियता का काल • साइमन कमीशन • नेहरू रिपोर्ट • मुस्लिम और हिंदू साम्प्रदायिक संघर्ष • जिन्ना बनाम नेहरू रिपोर्ट • कोलकाता कांग्रेस सत्र • 1929 के दौरान राजनीतिक स्थिति • लाहौर सत्र	205
26.	गांधीजी का जन आंदोलन का प्रयोग (भाग II) • सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 • गोलमेज़ सम्मेलन • पहला गोलमेज़ सम्मेलन • गांधी-इरविन समझौता • असहयोग आंदोलन और अवज्ञा आंदोलन के बीच अंतर • कराची कांग्रेस सत्र • दूसरा गोलमेज सम्मेलन और तीसरा गोलमेज सम्मेलन • मैकडोनाल्ड की घोषणा • सविनय अवज्ञा आंदोलन का दूसरा चरण • साम्प्रदायिक पुरस्कार और पूना समझौता • भारत सरकार अधिनियम - 1935	211
27.	द्वितीय विश्व युद्ध और स्वतंत्रता संग्राम • संघर्ष के तरीके पर कांग्रेस का संकट • द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ • पाकिस्तान प्रस्ताव 1940 • अगस्त प्रस्ताव • व्यक्तिगत सत्याग्रह • क्रिप्स मिशन 1942	232
28.	स्वतंत्रता की ओर अग्रसर • भारत छोड़ो आंदोलन 1942 के कारण • विद्रोह का प्रारंभ • राजगोपालाचारी फॉर्मूला 1944	239

	• देसाई-लियाकत पैक्ट (1945 ई.) • वेवेल योजना 1945 • कैबिनेट मिशन 1946 और इसका आगमन	
29.	विभाजन की ओर • हिंदू साम्प्रदायिकता और विभाजन • कांग्रेस और विभाजन • साम्प्रदायिक नरसंहार और अंतरिम सरकार • एटली का बयान • माउंटबेटन योजना • भारत स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 • रियासतों का एकीकरण	253
30.	कांग्रेस सत्र	268
31.	भारत के गवर्नर-जनरल और वायसराय	271
32.	ब्रिटिश भारत में कानून - ब्रिटिश भारत में पारित अधिनियमों की सूची	273
33.	भारत में लोकप्रिय आंदोलनों / घटनाएँ • भूमि सुधार • कुमारप्पा समिति • जमींदारी उन्मूलन • काश्तकारी सुधार • भूदान आंदोलन • सहकारी समितियाँ और सामुदायिक विकास कार्यक्रम • ऑपरेशन फ्लड • कृषि विकास और हरित क्रांति • भारतीय खाद्य निगम (FCI) • पर्यावरण आंदोलन • चिपको आंदोलन • नर्मदा बचाओ आंदोलन • साइलेंट वैली आंदोलन / साइलेंट वैली बचाओ • मत्स्य आंदोलन • महिला आंदोलन • स्व-नियोजित महिला संघ (सेवा) • मूल्य वृद्धि विरोधी आंदोलन • शराब विरोधी आंदोलन • दलित आंदोलन • संवैधानिक प्रावधान • आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) का युग	276

34.	क्रांतिकारी आतंकवाद • क्रांतिकारी गतिविधियों का पहला चरण (1907-1917) • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी आतंकवाद - द्वितीय चरण • प्रथम विश्व युद्ध के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया • गदर आंदोलन • हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) • भगत सिंह • भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) • सुभाष चंद्र बोस और दूसरी INA • आज़ाद हिंद फ़ौज • द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थिति • रॉयल इंडियन नेवी का विद्रोह	290
35.	सांप्रदायिकता	303
36.	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	312
37.	भारतीय पूंजीपति और राष्ट्रीय आंदोलन	331
38.	महिलाएं और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	334
39.	गैर-ब्राह्मण और दलित आंदोलन • धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों के बाद बदलती प्रवृत्ति • महाराष्ट्र में गैर-ब्राह्मण आंदोलन • जस्टिस पार्टी • मंदिर प्रवेश आंदोलन • दलित वर्गों और उनके उत्थान पर गांधी बनाम अंबेडकर • गांधी का हरिजन आंदोलन • अंबेडकर का योगदान	331
40.	भारत की विदेश नीति • विदेश नीति • गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) • पाकिस्तान के साथ संबंध • भारत-चीन संबंध • भारत-श्रीलंका संकट (1987) • भारत की परमाणु नीति संक्षिप्त समयरेखा	340

आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय – I

उत्तर – मुगलकाल

आधुनिक भारत का इतिहास **यूरोपियों के भारत आगमन** से शुरू होता है। भारत और यूरोप के बीच व्यापार मार्ग लंबे और घुमावदार थे, जो **ऑक्सस घाटी, सीरिया और मिस्र** से होकर गुजरते थे। व्यापार में वृद्धि हुई जब वास्को द गामा ने 1498 में केप ऑफ गुड होप के माध्यम से एक नया समुद्री मार्ग खोजा। इसके बाद कई व्यापारिक कंपनियां भारत में व्यापारिक केंद्र स्थापित करने के लिए आईं। धीरे-धीरे, उस समय की सभी यूरोपीय महाशक्तियों जैसे डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी, डेनिश आदि ने भारतीय उपमहाद्वीप के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए।

नोट - आधुनिक भारतीय इतिहास 18वीं सदी के मध्य से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक फैला हुआ है। इसमें भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों सहित भारत की जनता को प्रभावित करने वाली कई महत्वपूर्ण क्रांतिकारी घटनाएं शामिल हैं।

➢ मुगल साम्राज्य का पतन

मुगलों ने अपने समय के सबसे महान साम्राज्यों में से एक का निर्माण किया और भारतीय इतिहास और संस्कृति पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। यह वंश अपनी दो सदियों से अधिक की प्रभावी शासन अवधि, शासकों की कुशलता और प्रशासनिक संगठन के लिए जाना जाता है। मुगल शासकों ने कला और शिक्षा को बढ़ावा दिया। विशेष रूप से, मुगल वास्तुकला अपनी सुंदरता और सामंजस्य के लिए प्रसिद्ध हुई। हालांकि, कई कारणों के संयोजन ने इस वंश को पतन की ओर अग्रसर किया।

मुगल साम्राज्य का पतन 18वीं शताब्दी में मुहम्मद शाह (1719–48) के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ। इसके अधिकांश क्षेत्रों पर मराठों और फिर ब्रिटिशों का नियंत्रण हो गया। अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय (1837–57) को 1857-58 के भारतीय विद्रोह में उनकी भागीदारी के बाद ब्रिटिशों ने निर्वासित कर दिया।

मुगल साम्राज्य का पतन

मुगल साम्राज्य औरंगज़ेब की मृत्यु (1707 ईस्वी) के बाद तेजी से पतन की ओर बढ़ा। यह वर्ष आम तौर पर महान मुगलों और उत्तर-मुगलों के युग को अलग करने वाला माना जाता है।

असहिष्णुता और उत्पीड़न

मुगल सम्राट अपने विजय प्राप्त लोगों के साथ मेल-मिलाप करने और उन्हें सरकार और सेना में शामिल करने लगे। हालांकि, साम्राज्य के बाद के दशकों में, मुगल शासक अधिक निरंकुश और असहिष्णु हो गए। हिंदुओं और अन्य समूहों को निम्नतर माना गया, मुगल दरबार से बाहर कर दिया गया, और उन पर भारी कर लगाए गए। धार्मिक असहिष्णुता के कारण हिंदू और सिख मंदिरों और विद्यालयों का विनाश हुआ। इन नीतियों ने व्यापक असंतोष और विद्रोह को जन्म दिया, जिसने उनके साम्राज्य को खंडित कर दिया और उनके शासन को काफी हद तक कमजोर कर दिया।

औरंगज़ेब के शासनकाल (1658–1707) के दौरान, मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था गिरावट की ओर बढ़ने लगी। उनके द्वारा लगाए गए भारी करों ने कृषक वर्ग को दयनीय स्थिति में धकेल दिया। साथ ही, मुगल सरकार की गुणवत्ता में लगातार गिरावट आई। बाद के सम्राटों ने शासन करने या कृषि, प्रौद्योगिकी, या सेना में धन निवेश करने में बहुत कम रुचि दिखाई। कुछ सम्राटों ने तो आर्थिक समृद्धि को हतोत्साहित किया, यह सोचकर कि धनवान अपने स्वयं के सैन्य बल खड़े कर सकते हैं। अंततः, स्थानीय नेताओं ने विद्रोह किया और खुद को केंद्रीय सरकार से स्वतंत्र घोषित कर दिया, जिससे साम्राज्य का पतन तेज हो गया।

क्षेत्रीय हानियां (Territorial Losses)

अपने चरम पर मुगल साम्राज्य में अफगानिस्तान और भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश हिस्सा शामिल था। लेकिन 1719 में, जब **मुहम्मद शाह** ने सिंहासन संभाला, तब तक साम्राज्य का विघटन शुरू हो चुका था। इस प्रक्रिया को राजवंशीय युद्ध, गुटीय प्रतिद्वंद्विता और 1739 में ईरानी विजेता **नादिर शाह** के उत्तरी भारत पर संक्षिप्त लेकिन विनाशकारी आक्रमण ने और तेज कर दिया। **1748 में मुहम्मद** शाह की मृत्यु के बाद, मराठों ने लगभग पूरे उत्तर भारत पर कब्जा कर लिया। मुगल शासन दिल्ली के आसपास के एक छोटे से क्षेत्र तक सिमट कर रह गया। 1803 में ब्रिटिशों ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया। 1800 के मध्य तक मुग़ल साम्राज्य अपने सभी क्षेत्रों को अपने प्रतिद्वंद्वियों और अंग्रेजों से खो चुका था।

ब्रिटिश प्रभाव का उदय (Rising British Influence)

1600 में स्थापित ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी शुरू में केवल मुगल साम्राज्य के साथ व्यापार में रुचि रखती थी। लेकिन जैसे-जैसे साम्राज्य कमजोर होता गया, ब्रिटिशों ने मुगल शासकों पर अधिक प्रभाव डालना शुरू कर दिया। **1757 में, प्लासी** के युद्ध में ब्रिटिश सेनाओं ने बंगाल के नवाब (शासक) और फ्रांसीसी सेनाओं को हराया। इसके बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया। यद्यपि मुगल सम्राटों ने अपने सिंहासन बनाए रखा, उनके पास वास्तविक सत्ता बहुत कम थी। 1857-59 के भारतीय विद्रोह के दौरान, ब्रिटिशों ने अंतिम मुगल सम्राट को निर्वासित कर दिया।

➢ मुगल साम्राज्य का पतन (Decline of the Mughal Empire)

औरंगज़ेब के उत्तराधिकारियों को अस्थिरता और वित्तीय

संकटों ने परेशान किया। विद्रोह और बाहरी चुनौतियां **बहादुर शाह प्रथम (1707–12)** के शासनकाल में भी जारी रहीं, जिनका खराब वित्तीय प्रबंधन औरंगज़ेब के समान था। **फर्रुखसियर (1713–19)** उत्तराधिकार के युद्ध के बाद सिंहासन पर बैठे, जिसमें उन्हें दो अत्यधिक प्रभावशाली गवर्नरों का समर्थन मिला। लेकिन उनका शासन उन्हीं गुप्तचरों (एजेंटों) – जो बाद में उनके वज़ीर और मुख्य सैन्य कमांडर बन गए – और जोधपुर के शासक की साजिश के कारण समाप्त हो गया, जिन्होंने बाद में उनकी हत्या कर दी।

वंशीय केंद्र स्वयं को धीरे-धीरे अधिक असुरक्षित पाता गया, और दरबार अपने गवर्नरों से मिलने वाले राजस्व और समर्थन पर अधिक निर्भर हो गया। **मुहम्मद शाह (1719–48)** के शासनकाल के दौरान साम्राज्य का विघटन शुरू हुआ। यह प्रक्रिया वंशीय युद्ध, गुटीय प्रतिद्वंद्विता और 1739 में ईरानी **विजेता नादिर शाह के उत्तरी भारत** पर विनाशकारी आक्रमण में तेज हो गई। 1748 में मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद, मराठों ने लगभग पूरे उत्तर भारत पर कब्जा कर लिया। मुगल शासन केवल दिल्ली के आसपास के एक छोटे से क्षेत्र तक सिमट कर रह गया, जो 1785 में मराठों और फिर 1803 में ब्रिटिशों के नियंत्रण में चला गया। आखिरी मुगल सम्राट, **बहादुर शाह द्वितीय (1837–57 का शासनकाल)**, को 1857-58 के भारतीय विद्रोह में उनकी भागीदारी के बाद ब्रिटिशों ने यांगून, **म्यांमार (रंगून, बर्मा)** निर्वासित कर दिया।

❖ उत्तर मुगल (Later Mughals)

1707 ईस्वी से लेकर 1761 ईस्वी तक (औरंगज़ेब की मृत्यु से लेकर तीसरे पानीपत युद्ध के समय तक, जब अहमद शाह अब्दाली ने मराठा सरदारों को हराया) का काल क्षेत्रीय पहचान के पुनरुत्थान का साक्षी बना और कभी शक्तिशाली मुगलों की दुखद स्थिति को उजागर किया। मुगल दरबार सरदारों के बीच गुटीय राजनीति का केंद्र बन गया। साम्राज्य की कमजोरी तब स्पष्ट हो गई जब 1739 ईस्वी में नादिर शाह ने मुगल सम्राट को कैद कर लिया और दिल्ली को लूट लिया।

1707 ईस्वी में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद उनके तीन बेटों – **मुअज़्ज़म** (काबुल के गवर्नर), **मुहम्मद काम बख्श** (दक्कन के गवर्नर) और **मुहम्मद आज़म शाह** (गुजरात के गवर्नर) – के बीच उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। मुअज़्ज़म विजयी हुए और बहादुर शाह प्रथम की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठे।

औरंगज़ेब मुगल साम्राज्य के अंतिम महान शासक थे। उनके बाद आने वाले मुगल सम्राटों को उत्तर मुगल के नाम से जाना जाता है। उनका विवरण निम्नलिखित है।

➢ बहादुर शाह प्रथम / शाह आलम / मुअज़्ज़म (1707 ईस्वी – 1712 ईस्वी)

मुअज़्ज़म ने 63 वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठकर बहादुर शाह की उपाधि धारण की।

- उन्होंने अमीरों के प्रति उदार नीति अपनाई, उन्हें उनकी पसंद के क्षेत्र प्रदान किए और उन्हें पदोन्नति दी। इससे राज्य की वित्तीय स्थिति और खराब हो गई। यह भी माना जाता है कि वास्तविक सत्ता **वज़ीर जुल्फिकार खान** के हाथों में थी।
- उन्होंने हिंदुओं के प्रति सहिष्णु रवैया दिखाया, हालांकि उन्होंने जज़िया कर को कभी समाप्त नहीं किया।
- उनके शासनकाल में मारवाड़ और मेवाड़ की स्वतंत्रता को मान्यता दी गई। हालांकि, यह समझौता इन राज्यों को पूरी तरह मुगलो के प्रति वफादार बनाने में असफल रहा।
- मराठों के प्रति उनकी नीति भी आधी-अधूरी सुलह की थी। उन्होंने शाहू (जिन्हें उन्होंने रिहा किया) को मराठा राजा के रूप में मान्यता नहीं दी। उन्होंने मराठों को दक्कन की **सरदेशमुखी** दी, लेकिन **चौथ** नहीं दी, जिससे वे पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो सके। इस कारण मराठा आपस में और मुगलों के खिलाफ संघर्ष करते रहे।
- जाट प्रमुख चूड़ामन और बुंदेला प्रमुख छत्रसाल ने सिखों के खिलाफ उनके अभियान में उनका साथ दिया। दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह को उच्च मनसब प्रदान किया गया। हालांकि, उन्हें बंदा बहादुर के विद्रोह का सामना करना पड़ा और बंदा बहादुर के खिलाफ अभियान के दौरान ही उनकी मृत्यु हो गई (1712 ईस्वी)।
- मुगल इतिहासकारों जैसे खाफी खान ने उन्हें "**शाह-ए-बेखबर**" की उपाधि दी।

➢ फर्रुखसियर (1713 ईस्वी – 1719 ईस्वी)

फर्रुखसियर ने 1713 ईस्वी में आगरा में अपने भाई जहांदार शाह को हराकर सिंहासन पर कब्जा किया।

- उन्होंने **सैयद बंधुओं** (राज निर्माता) – **सैयद अब्दुल्ला खान** (वज़ीर) और **हुसैन अली खान** (मीर बख्शी) के समर्थन से सिंहासन पर बैठने में सफलता पाई। सैयद बंधुओं ने जुल्फिकार खान को मार दिया और खुद को प्रमुख पदों पर नियुक्त कर लिया।
- सैयद बंधुओं ने मराठों, जाटों और राजपूतों के साथ शांति स्थापित करने का प्रयास किया और सिख विद्रोह को भी सफलतापूर्वक दबा दिया। इसी दौरान सिख नेता बंदा बहादुर को फांसी दी गई।
- 1717 ईस्वी में फर्रुखसियर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को कई व्यापारिक विशेषाधिकार दिए और बंगाल के माध्यम से उनके व्यापार के लिए कस्टम शुल्क **(सीमा शुल्क)** से छूट प्रदान की।
- सैयद बंधुओं ने **जजिया** को पूरी तरह समाप्त कर दिया और कई स्थानों पर तीर्थ कर भी समाप्त कर दिया।
- सैयद बंधुओं की अत्यधिक शक्तियों के कारण फर्रुखसियर और सैयद बंधुओं के बीच मतभेद बढ़ गए। सम्राट ने सैयद

बंधुओं के खिलाफ तीन बार साजिश रची, लेकिन उन्हें पराजित करने में असफल रहे।
- 1719 ईस्वी में, सैयद बंधुओं ने **बालाजी विश्वनाथ** (मराठा शासक) के साथ गठबंधन किया और मराठा सैनिकों की मदद से फर्रुखसियर को मार डाला।

रफी-उद-दरजात (1719 ईस्वी)
- सैयद बंधुओं ने रफी-उद-दराजत को सिंहासन पर बिठाया। वास्तव में, सैयद बंधुओं ने आठ महीनों की छोटी अवधि में तीन युवा राजकुमारों को सिंहासन पर बैठाया।
- अत्यधिक संघर्ष के कारण चार महीने के भीतर उनकी मृत्यु हो गई।
- उनके शासनकाल के दौरान, औरंगज़ेब के पोते **नेकसियर** ने विद्रोह किया और मित्रसेन (एक नागर ब्राह्मण) के समर्थन से आगरा में सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

रफी-उद-दौला (1719 ईस्वी)
- हुसैन अली खान (सैयद बंधु) आगरा की ओर बढ़े और निकुसीयर (**नेकसियर**) को कैद कर लिया।
- रफी-उद-दौला को शाहजहां द्वितीय की उपाधि दी गई।
- उन्होंने बहुत ही कम समय के लिए शासन किया और तपेदिक (टीबी) के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

मुहम्मद शाह (रंगीला) / रोशन अख्तर (1719 – 1748 ईस्वी)
- जहांदार शाह के भाई, जिन्हें नृत्य का शौक था और वे खुद एक कुशल कथक नर्तक थे।
- 1720 ईस्वी में, उन्होंने निज़ाम-उल-मुल्क, चिन किलिच खान और अपने पिता के चचेरे भाई मुहम्मद अमीन खान की मदद से सैयद बंधुओं को सत्ता से हटा दिया। उन्होंने मुहम्मद अमीन खान को वज़ीर नियुक्त किया, जिन्होंने हुसैन अली खान को मार डाला, और उन्हें इतमाद-उद-दौला की उपाधि दी।
- उनके शासनकाल के दौरान स्वतंत्र राज्य उभरे, जैसे कि निज़ाम-उल-मुल्क के नेतृत्व में दक्कन, सआदत खान के नेतृत्व में अवध, और मुरशिद कुली खान के अधीन बिहार, बंगाल और ओडिशा।
- मुगल साम्राज्य की कमजोरी तब उजागर हुई जब नादिर शाह ने 1739 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया, मुगल सम्राट को कैद कर लिया और दिल्ली को लूट लिया।

नादिर शाह का आक्रमण (1739 ईस्वी)

नादिर शाह ईरान के सम्राट थे। वे वहां के राष्ट्रीय नायक माने जाते थे, जिन्होंने अफ़गानों को ईरान से बाहर खदेड़ दिया था।

आक्रमण के कारण –
- जब नादिर शाह ने 1736 ईस्वी में सत्ता संभाली, तो मुहम्मद शाह रंगीला ने फारस दरबार से अपने राजदूत को वापस बुला लिया और उस देश के साथ सभी कूटनीतिक संबंध तोड़ दिए। नादिर शाह ने मुगल दरबार में तीन दूत भेजे, जिनमें से तीसरे दूत को रंगीला ने बंदी बना लिया, जिससे नादिर शाह क्रोधित हो गए।
- जब नादिर शाह ने अफगानिस्तान पर आक्रमण किया, तो कुछ अफगान सरदारों ने रंगीला के अधीन शरण ले ली।
- इसके अलावा, **सआदत खान और निज़ाम-उल-मुल्क** ने नादिर शाह को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।

आक्रमण का क्रम –
- उन्होंने जलालाबाद, पेशावर (1738 ईस्वी) और फिर 1739 ईस्वी में लाहौर पर कब्जा कर लिया।

करनाल की लड़ाई (1739 ईस्वी)
- फारसी सेना की प्रगति की खबर सुनकर, मुहम्मद शाह ने अपनी सेना के साथ दिल्ली से बाहर निकलकर आक्रमणकारी सेना से मुकाबला करने और उन्हें राजधानी में प्रवेश करने से रोकने की कोशिश की।
- दोनों सेनाएं करनाल (दिल्ली से लगभग 120 किमी उत्तर) में आमने-सामने हुईं। फारसी सैनिकों ने मुगल सेना पर कहर बरपाया।
- मुगल सम्राट **मुहम्मद शाह** ने आत्मसमर्पण कर दिया और नादिर शाह को अपनी राजधानी ले जाना पड़ा। पूरी तिजोरी लूट ली गई और सैनिकों ने दिल्ली में आम जनता, महिलाओं और बच्चों सहित, का बेरहमी से नरसंहार किया।
- दिल्ली की लूटपाट कई दिनों तक चली, जिसके बाद नादिर शाह ने अपने सैनिकों को रुकने का आदेश दिया। मई 1739 ईस्वी में, नादिर शाह और उसकी सेना ने शहर छोड़ दिया।
- मुहम्मद शाह को मुगल साम्राज्य का सम्राट बनाए रखा गया, लेकिन उन्हें सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित साम्राज्य के सभी प्रांत नादिर शाह को सौंपने पड़े।
- नादिर शाह ने लगभग पूरी तिजोरी खाली कर दी और प्रसिद्ध **कोहिनूर और मयूर सिंहासन** भी अपने साथ ले गए।
- नादिर शाह के आक्रमण ने मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को अपूरणीय क्षति पहुंचाई और मराठा सरदारों और विदेशी व्यापारिक कंपनियों के सामने साम्राज्य की कमजोरियों को उजागर कर दिया।

अहमद शाह (1748 – 1757 ईस्वी)
- मुहम्मद शाह रंगीला और कुदसिया बेगम (एक नृत्यांगना) के पुत्र।
- अफगानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली ने कई बार दिल्ली पर आक्रमण किया और पंजाब के साथ मुल्तान को अपने कब्जे में ले लिया।
- मराठों ने मालवा और बुंदेलखंड पर अधिकार कर लिया।
- उनके वज़ीर, इमाद-उल-मुल्क ने उन्हें अंधा कर दिया और सलिमगढ़ में कैद कर दिया।

आलमगीर द्वितीय (1754 – 1759 ईस्वी)
- वे जहांदार शाह के दूसरे पुत्र थे और इमाद-उल-मुल्क ने अहमद शाह को हटाने के बाद उन्हें गद्दी पर बिठाया।

- अहमद शाह अब्दाली को बार-बार आक्रमणों का सामना करना पड़ा।
- उनके शासनकाल में प्रसिद्ध **प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ईस्वी)** लड़ा गया। इस युद्ध ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल पर नियंत्रण स्थापित करने में मदद की।
- उन्हें भी उनके वज़ीर, इमाद-उल-मुल्क ने हत्या कर दी।

अली गौहर / शाह आलम द्वितीय (1759 – 1806 ईस्वी)

- उनके शासनकाल में मुगल सत्ता इतनी कमजोर हो गई कि फारसी में यह कहावत चल पड़ी: "सुल्तनत-ए-शाह आलम, अज़ दिल्ली ता पालम", जिसका अर्थ है "शाह आलम का राज्य दिल्ली से पालम (दिल्ली का एक उपनगर) तक सीमित है।"
- वज़ीर के साथ अपने संघर्ष के कारण, वह **अवध** भाग गया (लगभग 1761 – 1764 ईस्वी)। वह तब दिल्ली लौटा जब मराठों ने अपनी पकड़ फिर से स्थापित कर ली और उसे राजधानी में आमंत्रित किया।
- **तीसरा पानीपत का युद्ध (1761 ईस्वी)** - यह युद्ध उनके शासनकाल में मराठों और अहमद शाह अब्दाली के बीच लड़ा गया।
- **बक्सर का युद्ध (1764 ईस्वी)** - यह युद्ध ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना (हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में) और **मीर कासिम** (बंगाल के नवाब), **शुजा-उद-दौला** (अवध के नवाब) और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध का अंत **इलाहाबाद की संधि (1765 ईस्वी)** के साथ हुआ, जिसके तहत बंगाल, बिहार और ओडिशा में दीवानी अधिकार (भूमि राजस्व वसूली का अधिकार) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिए गए।
- वे पहले मुगल शासक थे, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के पेंशनभोगी बने।

अकबर द्वितीय (1806 – 1837 ईस्वी)

वे शाह आलम द्वितीय के पुत्र थे और केवल ब्रिटिश संरक्षण में रहे क्योंकि 1803 ईस्वी में ब्रिटिश ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

- उन्होंने राममोहन राय को "**राजा**" की उपाधि प्रदान की।
- वे एक महान कवि थे और उनके शासनकाल में **फूल वालों की सैर** नामक हिंदू-मुस्लिम एकता का त्योहार शुरू किया गया।

बहादुर शाह द्वितीय (ज़फ़र) (1837 – 1857 ईस्वी)

वे मुगल साम्राज्य के अंतिम शासक थे। वे एक कुशल कवि थे और उनका उपनाम "**ज़फ़र**" (विजय) था।

- उन्होंने **1857 के विद्रोह** में भाग लिया।
- विद्रोह दबाए जाने के बाद उन्हें रंगून (बर्मा) निर्वासित कर दिया गया, जहां 1862 ईस्वी में उनकी मृत्यु हो गई।

❖ **मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण:**

- मुग़ल साम्राज्य के पतन और विघटन के कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और संस्थागत तत्व थे –

1. **उत्तराधिकार युद्ध -**
   - मुग़लों ने ज्येष्ठ पुत्र के उत्तराधिकार के नियम जैसे किसी भी उत्तराधिकार के कानून का पालन नहीं किया।
   - इसके परिणामस्वरूप, हर बार जब एक शासक की मृत्यु होती थी, तो सिंहासन के लिए भाइयों के बीच उत्तराधिकार युद्ध शुरू हो जाता था।
   - इसने मुग़ल साम्राज्य को कमजोर किया, खासकर औरंगजेब के बाद।
   - दरबारियों ने एक पक्ष का समर्थन करके अपनी शक्ति बढ़ाई।
2. **औरंगजेब की नीतियाँ -**
   - औरंगजेब यह समझने में असफल रहे कि विशाल मुग़ल साम्राज्य जनता के सहयोग पर निर्भर था।
   - औरंगजेब की धार्मिक कठोरता और हिन्दुओं के प्रति उनकी नीतियों ने मुग़ल साम्राज्य की स्थिरता को नुकसान पहुँचाया।
   - उन्होंने राजपूतों का समर्थन खो दिया, जो साम्राज्य की ताकत में महत्वपूर्ण योगदान देते थे।
   - वे साम्राज्य के स्तंभ थे, लेकिन औरंगजेब की नीतियों ने उन्हें कट्टर दुश्मन बना दिया।
   - सिक्खों, मराठों, जाटों और राजपूतों से युद्ध ने मुग़ल साम्राज्य के संसाधनों को समाप्त कर दिया।
3. **औरंगजेब का रूढ़िवादी शासन** - औरंगज़ेब की धार्मिक और दक्कन की नीतियों ने साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। गोलकुंडा, बीजापुर और कर्नाटक पर मुग़ल प्रशासन का विस्तार करने के प्रयास ने मुग़ल प्रशासन को एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचा दिया। इसने मराठा हमलों के लिए मुग़ल सरदारों को भी इतना खुला छोड़ दिया कि उस क्षेत्र के मुग़ल अमीरों को उन्हें सौंपे गए जागीरों से अपना बकाया वसूल करना असंभव लगा और कभी-कभी मराठों के साथ निजी समझौते भी किए।

   औरंगजेब का अपने गैर-मुस्लिम प्रजाजनों की संवेदनाओं का सम्मान करने में असफलता मिली, उनके द्वारा एक ऐसी नीति का निर्धारण किया गया जिसने कई मंदिरों के विनाश और जजिया कर की पुनः स्थापन की, जिससे हिंदू उनसे दूर हो गए और उन वर्गों के हाथ मजबूत हुए जो राजनीतिक या अन्य कारणों से मुग़ल साम्राज्य के विरोधी थे।

   कहा जाता है कि जब तक औरंगजेब सत्ता में आए, साम्राज्य में विघटन की सामाजिक-आर्थिक शक्तियाँ पहले से ही मजबूत हो चुकी थीं। औरंगजेब में दूरदृष्टि और राजनैतिक कौशल की कमी थी, जिससे वे सामाजिक-राजनीतिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन नहीं कर सके या ऐसी नीतियाँ नहीं अपना सके जो विभिन्न प्रतिस्पर्धी तत्वों को कुछ समय के लिए सुलह करवा सकें । इस प्रकार, औरंगजेब परिस्थितियों के शिकार थे, और उन्हीं परिस्थितियों को उन्होंने खुद उत्पन्न किया था, जिनका वे शिकार बने।
4. **कमज़ोर उत्तराधिकारी** – औरंगजेब के उत्तराधिकारी कमजोर थे और प्रशासन को प्रभावी रूप से संभालने में

अध्याय – 3

यूरोपियों का आगमन

भारत और यूरोप के बीच वाणिज्यिक संपर्क बहुत पुराने थे, जो स्थल मार्ग से होते हुए ऑक्सस घाटी, सीरिया या मिस्र के रास्ते होते थे। 1498 में वास्को दी गामा द्वारा केप ऑफ गुड होप के रास्ते नए समुद्री मार्ग की खोज के बाद, व्यापार में वृद्धि हुई और कई व्यापारिक कंपनियाँ भारत आईं और अपने व्यापार केंद्र स्थापित किए।

वे शुरुआत में व्यापारी के रूप में आए थे, लेकिन समय के साथ, अपने व्यापारिक हितों की सुरक्षा करने के लिए, उन्होंने भारत की राजनीति में प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रकार, यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापारिक प्रतिस्पर्धा राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में बदल गई और इसने उन्हें केवल आपस में ही नहीं, बल्कि भारतीय शासकों के साथ भी संघर्ष में डाल दिया। अंतत; ब्रिटिशों ने भारत में अपना शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

❖ भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज और अन्वेषण

- सातवीं सदी में रोम साम्राज्य के पतन के बाद, अरबों ने मिस्र और फारस में अपनी प्रभुता स्थापित की।
- यूरोपीयों और भारत के बीच सीधा संपर्क घट गया। भारतीय वस्त्रों जैसे मसाले, कालिको, रेशम, और विभिन्न कीमती रत्नों तक आसान पहुँच पर काफी असर पड़ा।
- **1453** में, **कॉन्स्टेंटिनोपल (कुस्तुनतुनिया)** पर ओटोमैन तुर्कों का आक्रमण हुआ, और लाल सागर का व्यापार मार्ग राज्य का एकाधिकार बन गया, जिससे इस्लामी शासकों को अत्यधिक राजस्व प्राप्त हुआ।
- अरबों ने भारत के लिए भूमि मार्गों पर भी नियंत्रण कर लिया।
- पंद्रहवीं सदी में यूरोप में पुनर्जागरण की भावना ने समृद्धि में वृद्धि की, और इसके साथ-साथ, ओरिएंटल लक्जरी वस्त्रों की मांग भी बढ़ी।
- पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी, जिन्हें **'नेविगेटर / नाविक'** के उपनाम से जाना जाता था, ने **टॉर्डेसिलस की संधि (1494)** के तहत पुर्तगाल और स्पेन के शासकों ने गैर-ईसाई दुनिया को एक काल्पनिक रेखा द्वारा विभाजित किया, जो केप वर्डे द्वीपों से लगभग 1,300 मील पश्चिम थी।
- पुर्तगाल इस रेखा के पूर्व में स्थित सभी भूमि पर दावा कर सकता था, जबकि स्पेन इस रेखा के पश्चिम में स्थित सभी भूमि पर दावा कर सकता था।

भारत में पुर्तगाली

- पुर्तगाली पहले यूरोपीय थे जो भारत पहुँचे, और वे आखिरी थे जो यहाँ से गए।
- पुनर्जागरण की भावना, जिसमें साहसिकता की मांग थी, ने पंद्रहवीं सदी में यूरोप को आकर्षित किया।
- इस समय के दौरान, यूरोप ने जहाज निर्माण और नौवहन में महत्वपूर्ण प्रगति की। परिणामस्वरूप, पूरे यूरोप में पूर्व की

खोजी गयी भूमि पर साहसिक समुद्री यात्रा की मजबूत इच्छा उत्पन्न हुई।

➢ भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज

इतिहासकारों ने यह नोट किया है कि भारत के लिए एक समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी, जिन्हें 'नेविगेटर' के नाम से जाना जाता था, के लिए एक जुनून बन गई थी, साथ ही यह मुसलमानों के पूर्वी भूमध्यसागर में प्रभुत्व और भारत और यूरोप को जोड़ने वाले सभी मार्गों को पार करने का एक तरीका भी था।

- पुर्तगाल और स्पेन के राजाओं ने 1497 में **टॉर्डेसिलस की संधि (1494)** के तहत एक काल्पनिक रेखा द्वारा गैर-ईसाई दुनिया को आपस में विभाजित किया, जो केप वर्डे द्वीपों से लगभग 1,300 मील पश्चिम थी।
- संधि के अनुसार, पुर्तगाल रेखा के पूर्व में स्थित किसी भी भूमि का दावा कर सकता था, जबकि स्पेन रेखा के पश्चिम में स्थित सभी भूमि का दावा कर सकता था।
- इसके परिणामस्वरूप, भारतीय महासागर में पुर्तगाली आक्रमण के लिए मार्ग तैयार हो गया।
- पुर्तगाली नाविक **बार्थोलोम्यू डायस** ने 1487 में अफ्रीका **में केप ऑफ गुड होप** को पार किया और पूर्वी तट के साथ यात्रा की, यह मानते हुए कि भारत तक पहुँचने के लिए लंबे समय से खोजा गया समुद्री मार्ग मिल गया था।
- हालांकि, पुर्तगाली जहाजों का एक अभियान 10 साल बाद (1497 में) भारत के लिए रवाना हुआ और लगभग 11 महीने में **मई 1498 में भारत पहुँच गया।**

- **भारत में पुर्तगाली शक्ति का समयरेखा**
- 1498 – वास्को-दा-गामा कालीकट पहुँचे और स्थानीय शासक ज़मोरिन ने उनका स्वागत किया।
- 1503 – कोचीन में पहला पुर्तगाली किला बनवाया गया।
- 1505 – कन्नौरे में दूसरा पुर्तगाली किला बनवाया गया।
- 1509 – कन्नौरे में तीसरा पुर्तगाली किला बनवाया गया। पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस्को अल्मेडा ने गुजरात, मिस्र और ज़मोरिन के संयुक्त बेड़े को हराया।
- 1510 – पुर्तगाली गवर्नर अल्फोंसो अल्बुकर्क ने बीजापुर से गोवा छीन लिया।
- 1530 – गोवा को पुर्तगाली राजधानी घोषित किया गया।
- 1535 – दीव को पुर्तगालियों ने जीत लिया।
- 1559 – दमण को पुर्तगालियों ने कब्जा किया।
- 1596 – डचों ने पुर्तगालियों को दक्षिण-पूर्व एशिया से बाहर कर दिया।
- 1612 – अंग्रेजों ने सूरत पर कब्जा किया।
- 1663 – डचों ने मलाबार तट पर सभी पुर्तगाली किलों को कब्जा किया और पुर्तगालियों को बाहर कर दिया।

➢ भारत में पुर्तगालियों का उदय

- भारत का उत्तरी भाग गुजरात को छोड़कर, जो 1458 से 1511 तक शक्तिशाली **महमूद बेगड़ा (या बेगाडा)** द्वारा शासित था, कई छोटे-छोटे राज्यों में काफ़ी बँटा हुआ था।
- दक्कन में बहमनी साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में विघटित हो रहा था। किसी भी शक्ति के पास मजबूत समुद्री बेड़ा नहीं था, और उनकी समुद्री क्षमताओं को बेहतर बनाने की कोई योजना नहीं थी।
- चीनी सम्राट की शाही घोषणा ने सुदूर पूर्व में चीनी जहाजों की समुद्री पहुँच को सीमित कर दिया था।
- अरब व्यापारी और जहाज़ मालिक जिन्होंने पहले हिंद महासागर के वाणिज्य को नियंत्रित किया था, संगठन और एकजुटता के मामले में पुर्तगालियों के सामने कुछ भी नहीं थे। पुर्तगालियों के जहाजों पर बंदूकें भी लगी हुई थीं।
- **वास्को डी गामा** के आगमन के पचास वर्षों के भीतर, भारत के कई तटीय क्षेत्र पुर्तगाली नियंत्रण में आ गए थे।
- गोवा के आसपास, पुर्तगालियों ने साठ मील का तटवर्ती इलाका अपने कब्ज़े में कर लिया था।
- उन्होंने मुंबई से दमन और दीव तक पश्चिमी तट पर ज़मीन की एक छोटी सी पट्टी, साथ ही गुजरात के प्रवेश मार्गों को चार प्रमुख बंदरगाहों और सैकड़ों शहरों और गाँवों के साथ नियंत्रित किया।
- उन्होंने दक्षिण **में मंगलोर, कन्नूर, कोचीन और कालीकट** सहित समुद्री गढ़ों और वाणिज्यिक बंदरगाहों की एक श्रृंखला को नियंत्रित किया।
- जबकि **मालाबार** में उनकी शक्ति मज़बूत नहीं थी, यह स्थानीय राजाओं पर प्रभाव डालने या नियंत्रण करने के लिए पर्याप्त थी जो मसाला उगाने वाले क्षेत्र को नियंत्रित करते थे।
- पूर्वी तट पर, पुर्तगालियों ने **सैन थोमे (चेन्नई के पास) और नागपट्टिनम (तमिलनाडु में)** में सैन्य प्रतिष्ठान और शहर बनाए।
- 16वीं शताब्दी के अंत तक हुगली पश्चिम बंगाल में एक समृद्ध बस्ती के रूप में विकसित हो गया था।

पुर्तगालियों का महत्व

- अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि पुर्तगालियों का आगमन न केवल यूरोपीय युग की शुरुआत का प्रतीक था, बल्कि समुद्री शक्ति के विकास का भी संकेत था।
- उदाहरण के लिए, चोलों ने समुद्री शक्ति के रूप में कार्य किया था, लेकिन यह पहला अवसर था जब एक विदेशी शक्ति पानी के रास्ते भारत पहुंची थी।
- पुर्तगालियों के जहाजों पर तोपें लगी थीं, और यह वाणिज्य पर एकाधिकार स्थापित करने की दिशा में पहला कदम था, जिसे वे बल का प्रयोग करके या धमकी देकर प्राप्त करना चाहते थे।
- पुर्तगालियों ने शरीर की कवच, माचलॉक सिपाही और जहाजों से उतारे गए हथियारों का इस्तेमाल किया, जो 16वीं सदी में मलाबार में सैन्य नवाचार को दर्शाता है।
- दूसरी ओर, पुर्तगालियों द्वारा तटीय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सैन्य योगदान था, जो **सैनिकों के समूहों की ड्रिल प्रणाली**

थी, जिसे स्पेनी मॉडल के आधार पर 1630 के दशक में डच दबाव के जवाब में लागू किया गया था।

- पुर्तगाल समुद्री युद्ध नीति के विशेषज्ञ थे।
- उनके बहु-मंजिला जहाज मजबूत बने थे, क्योंकि उन्हें नियमित मानसून से पहले समुद्र की आँधियों से लड़ा जाना था, जिससे वे अधिक हथियार ले जाने में सक्षम थे।
- गोवा जटिल फिलिग्री कार्य, पत्तों के काम और धातु कार्य का केंद्र बन गया, जिसमें रत्नों के साथ चांदी और सोने के काम का प्रसार हुआ।
- हालांकि, पुर्तगालियों के तहत निर्मित चर्चों के अंदर के हिस्से में बहुत अधिक लकड़ी का काम और कला शामिल थी, साथ ही चित्रित छतें भी थीं, लेकिन वास्तुकला की योजनाएं अक्सर साधारण होती थीं।

<u>व्यापार से शासन तक</u>

- वास्को डी गामा ने भारत में तीन महीने बिताए।
- जब वह पुर्तगाल लौटा, तो वह अपने साथ एक बहुमूल्य माल लाया और यूरोपीय बाज़ार में सामान को मुनाफ़े में बेचा।
- 1501 में वास्को डी गामा भारत लौटा।
- जब वास्को डी गामा ने आर्थिक लालच को हिंसक घृणा के साथ मिला दिया और जहाँ कहीं भी हो सका, अरब व्यापारियों का विरोध किया, तो ज़मोरिन ने पुर्तगालियों के पक्ष में अरब व्यापारियों को बाहर करने से इनकार कर दिया।
- **कन्नूर** में, वास्को डी गामा ने एक व्यापारिक फ़ैक्टरी स्थापित की।
- **कालीकट, कन्नूर और कोचीन** धीरे-धीरे प्रमुख पुर्तगाली वाणिज्य केंद्र बन गए।

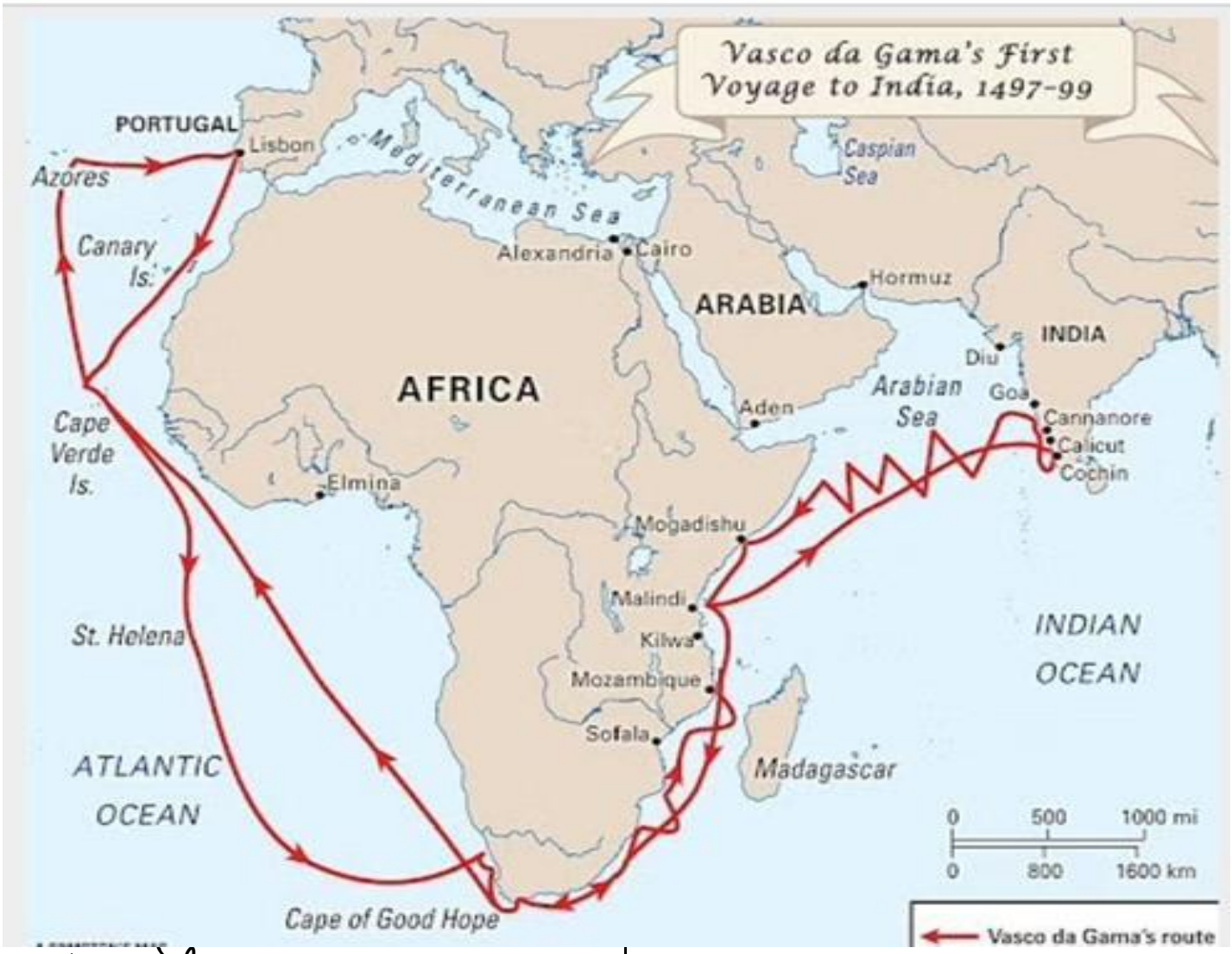

❖ ***वास्को डी गामा***

- मई 1498 में **अब्दुल मजीद** नामक एक गुजराती पायलट के नेतृत्व में वास्को डी गामा के अधीन तीन जहाजों के कालीकट पहुँचने का भारतीय इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

वास्को डी गामा का यात्रा

फ्रांसिस्को डी अल्मेडा

- 1505 में, पुर्तगाल के राजा फर्डिनेंड प्रथम ने भारत में तीन साल के लिए एक गवर्नर नियुक्त किया और पुर्तगाली हितों की रक्षा करने के लिए उसे पर्याप्त सैनिक दिए।
- नव नियुक्त गवर्नर, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को भारत में पुर्तगाली स्थिति को मजबूत करने और **आदन, ओर्मुज़ और मलक्का** को जीतकर मुस्लिम व्यापार को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया।
- 1507 में, दियू के तट पर एक नौसैनिक कार्रवाई में, पुर्तगाली सेना टुकड़ी को संयुक्त मिस्र और गुजरात की नौसेनाओं ने पराजित कर दिया, और अल्मेडा के बेटे की हत्या कर दी गई।
- अगले साल, अल्मेडा ने अपनी हार का बदला लेते हुए दोनों नौसेनाओं को नष्ट कर दिया। अल्मेडा का सपना था कि पुर्तगाल भारतीय महासागर पर शासन करे।
- "**ब्लू वाटर पॉलिसी**" (कार्टेज प्रणाली) उनकी नीति थी।

ब्लू वाटर पॉलिसी

- डॉन फ्रांसिस्को डी अल्मेडा जो भारत में पुर्तगाली साम्राज्य के पहले वायसराय थे, को "**ब्लू वाटर**" नीति का श्रेय जाता है।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य पुर्तगाल को समुद्री क्षेत्र में एक प्रमुख देश बनाना था।
- भारत में, यह भारतीय महासागर को मजबूत करना था ताकि पुर्तगाली व्यापार भारतीय महासागर में खुद को स्थापित कर सकें।
- भारत में वायसराय फ्रांसिस्को डी अल्मेडा की ब्लू वाटर नीति का लक्ष्य भारतीय जलमार्गों में समुद्री प्रभुत्व बनाए रखना और उनकी गतिविधियों को केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित करना था।
- इस सिद्धांत के अनुसार, पुर्तगाल को अरब सागर और भारतीय महासागर में एकमात्र व्यापारिक शक्ति होना चाहिए।
- भारतीय महाद्वीप पर किलों को बनाने के बजाय, यह सुझाव दिया गया था कि पुर्तगाली समुद्र में मजबूत बनें।

अल्फांसो डी अल्बुकर्क

- अल्बुकर्क, जिन्होंने **अल्मेडा** की मृत्यु के बाद भारत में पुर्तगाली गवर्नर का पद संभाला, वह पूरब में पुर्तगाली अधिकार के सच्चे निर्माता थे, और यह मिशन उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले पूरा किया।
- समुद्र के सभी निकासी मार्गों पर किलों का निर्माण करके, उन्होंने भारतीय महासागर पर पुर्तगाल की रणनीतिक नियंत्रण सुनिश्चित किया।
- अल्बुकर्क के नेतृत्व में, पुर्तगालियों ने अन्य जहाजों के लिए अनुमति प्रणाली स्थापित करके और क्षेत्र के प्रमुख जहाज निर्माण केंद्रों पर नियंत्रण स्थापित करके अपनी पकड़ मजबूत की।

नीनो दा कुन्हा

- नवंबर 1529 में, नीनो दा कुन्हा को भारत में पुर्तगाली हितों का गवर्नर नियुक्त किया गया, और लगभग एक साल बाद, पुर्तगाली प्रशासन ने अपने मुख्यालय को कोचिन से गोवा स्थानांतरित कर दिया।
- मुग़ल सम्राट **हुमायूँ** से संघर्ष के दौरान, गुजरात के **बहादुर शाह ने 1534** में **बेसिन द्वीप** को उनके साथ उसके निर्भरताओं और आय सहित पुर्तगालियों को सौंपकर उनका समर्थन प्राप्त किया।
- उन्होंने पुर्तगालियों को दीव में एक ठिकाना भी प्रदान किया।
- दा कुन्हा ने बंगाल में पुर्तगाली प्रभाव को बढ़ाने का लक्ष्य रखा, और उन्होंने हुगली शहर में बड़ी संख्या में पुर्तगाली नागरिकों को बसाया।

हुगली पर कब्जा

- 1579 के एक सम्राट **फ़रमान** के आधार पर, पुर्तगाली बंगाल में सतगांव से कुछ दूरी पर एक नदी के किनारे बस गए थे और बाद में हुगली में स्थानांतरित हो गए।
- 24 जून, 1632 को - हुगली पर कब्जा कर लिया गया। उस समय बंगाल **के गवर्नर कासिम खान थे।**

भारत में पुर्तगाली, उनकी नीतियाँ और कार्य	
फ्रांसिस्को डी अल्मेडा (1505 - 1509)	भारत में पहले पुर्तगाली गवर्नर, ब्लू वाटर की नीति (कार्टेज प्रणाली)।
अल्फ़ोंसो डी अल्बुकर्क (1509 - 1515)	भारत में दूसरे पुर्तगाली गवर्नर, पुर्तगाली शक्ति के संस्थापक, साम्राज्यवाद की नीति अपनाई, 1510 में बिजापुर के शासक से गोवा लिया, और अपने प्रभाव क्षेत्र में सती प्रथा को प्रतिबंधित किया।
नीनो दा कुन्हा (1529 - 1538)	1530 में कोचीन को बदलकर गोवा को पुर्तगाली राजधानी बनाया और गुजरात के बहादुर शाह से दीव और बेसिन पर नियंत्रण कर लिया।
मार्टिन अल्फ़ोंसो डी सूजा (1542 - 1545)	फ्रांसिस्को जेवियर (एक जेसुइट संत) मार्टिन अल्फ़ोंसो डी सूजा के साथ भारत पहुँचे।

❖ पुर्तगालियों का पतन

- अफोंसो डी अल्बुकर्क के बाद जो गवर्नर आए, वे कमजोर और कम सक्षम थे, जिसके परिणामस्वरूप भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का पतन हुआ।

- पुर्तगाली धार्मिक मामलों में असहिष्णु और कट्टरपंथी थे। उन्होंने स्थानीय लोगों को क्रिस्चियन बनाने के लिए बलात्कारी धर्मांतरण का सहारा लिया। इस दृष्टिकोण ने भारत के लोगों को नफरत दिलाई, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता सामान्य थी।
- पुर्तगाली प्रशासन अधिकतर अपने स्वयं के संपत्ति बनाने में रुचि रखता था, जिससे भारत के लोगों से और अधिक विलगाव हुआ। वे अमानवीय क्रूरताओं और अराजकता में भी शामिल थे। वे समुद्री लूट और डाका डालने से भी नहीं चूके। इन सभी कार्यों ने पुर्तगालियों के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण को जन्म दिया।
- **पुर्तगाली और स्पेनिश ने 15वीं सदी** और 16वीं सदी के पहले हिस्से में अंग्रेजों और डचों को काफी पीछे छोड़ दिया था। लेकिन 16वीं सदी के दूसरे हिस्से में, इंग्लैंड और हॉलैंड, और बाद में फ्रांस, जो बढ़ती हुई वाणिज्यिक और नौसैनिक शक्तियाँ थीं, ने विश्व व्यापार पर स्पेनिश और पुर्तगाली एकाधिकार के खिलाफ तीव्र संघर्ष किया। इस संघर्ष में पुर्तगाली पराजित हो गए। इससे भारत में भी उनकी शक्ति कमजोर हुई।
- इसके अलावा, मुग़ल साम्राज्य की शक्ति और मराठों की बढ़ती हुई ताकत ने पुर्तगालियों को भारत में लंबे समय तक अपने व्यापारिक एकाधिकार को बनाए रखने नहीं दिया। उदाहरण के लिए, उन्होंने 1631 के आसपास बंगाल में मुग़ल साम्राज्य से संघर्ष किया और हुगली में अपने ठिकाने से बाहर खदेड़ दिए गए।
- पुर्तगालियों ने लैटिन अमेरिका में ब्राज़ील की खोज की और इसके मुकाबले भारत में अपने क्षेत्रों पर कम ध्यान देने लगे।
- जब **पुर्तगाल 1580 के आसपास स्पेन के अधीन** हो गया, तो स्पेन के हितों ने पुर्तगाल के हितों पर हावी हो गए, जिन्हें बाद में दरकिनार कर दिया गया।

- **<u>पुर्तगालियों का भारत में योगदान</u>**
- उन्होंने भारत में **तंबाकू** की खेती शुरू की।
- पुर्तगालियों ने **आलू, टमाटर, अनानास और काजू** को भारतीय आहार में शामिल किया, और गोवा में काजू के फल से फेनी, उनका स्थानीय शराब तैयार किया जाता है।
- उन्होंने भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों पर कैथोलिक धर्म का प्रचार किया।
- उन्होंने 1556 ईस्वी में गोवा में भारत का पहला मुद्रण प्रेस स्थापित किया। **'द इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स'** नामक पहला वैज्ञानिक काम **1563** में गोवा में प्रकाशित हुआ।
- वे पहले यूरोपीय थे जिन्होंने 'समुद्री व्यापार और समुद्र पर सर्वोच्चता स्थापित कैसे की जाए' को **कार्टाज़े प्रणाली** के माध्यम से परिभाषित किया (इस प्रणाली के तहत, पुर्तगालियों के क्षेत्र से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति को अनुमति पत्र खरीदना पड़ता था, अन्यथा उसे पकड़ लिया जाता)।
- वे पहले यूरोपीय थे जिन्होंने भारत और एशिया में ईसाई धर्म का प्रचार किया।

- **<u>भारतीय संस्कृति पर पुर्तगालियों का प्रभाव</u>**
- गोवा और भारत के अन्य हिस्सों में पुर्तगालियों की उपस्थिति ने पश्चिमी वास्तुकला के तत्वों को अपनाने में मदद की।
- संस्कृतियों के इस मिलन का परिणाम एक बहुत ही अद्वितीय शैली का निर्माण हुआ, जो धार्मिक और सांसारिक संरचनाओं (**गिरजाघर, मठ, और हिंदू मंदिरों**) के लिए थी।
- वास्तुकला, विशेष रूप से चर्चों की वास्तुकला, दक्षिणी यूरोप की याद दिलाती है। संगीत में पुर्तगाली फादो का भी प्रभाव देखा जाता है।
- उन्होंने भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों पर कैथोलिक धर्म का प्रसार किया।
- वे पहले यूरोपीय थे जिन्होंने पूरे भारत और एशिया में ईसाई धर्म का प्रचार किया।

<u>निष्कर्ष</u>

पूर्तगालियों का भारत राज्य, जिसे कभी-कभी पुर्तगाली इंडिया के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप में एक पुर्तगाली उपनिवेशी राज्य था। पुर्तगाली भारत आने वाले पहले यूरोपीय थे और जाने वाले आखिरी। वास्को डी गामा 1498 में भारत में कदम रखने वाले पहले पुर्तगाली थे। हालांकि, भारत में पुर्तगाली नियंत्रण को 1505 से 1961 तक माना जाता है। हालांकि पुर्तगाली उपनिवेशवाद ने अपने अंग्रेजी समकक्ष से अधिक समय तक शासन किया, इसका प्रभाव अपने क्षेत्रों के बाहर बहुत कम था।

❖ ***डच भारत में***

- *डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में शहरों और वाणिज्यिक संचालन को नियंत्रित किया, जिन्हें डच उपनिवेश कहा जाता था। डच भारत एक भौगोलिक स्थान था, न कि राजनीतिक शक्ति। डच लोग हॉलैंड (अब नीदरलैंड) के निवासी थे। डच दूसरे यूरोपीय थे, जिन्होंने पुर्तगालियों के बाद भारत में कदम रखा। डच सरकार ने 1602 में नीदरलैंड्स की **यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी** को पूर्वी हिंद महासागर में व्यापार करने का लाइसेंस दिया, जिसमें भारत भी शामिल था।*
- *" **वेरिंगदे ओस्ट-इंडिशे कॉम्पैनी (VOC)** " के नाम से डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना लगभग **1602** ईस्वी में हुई थी।*
- *डचों ने अपना पहला केंद्र मसुलीपट्टनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित किया। उन्होंने गुजरात (सूरत, ब्रोच, कंबे, और अहमदाबाद), केरल (कोच्चि), बंगाल (चिनसुरा), बिहार (पटना), और उत्तर प्रदेश (आगरा) में भी वाणिज्यिक टर्मिनल बनाए।*
- *डच ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसे पहले "**यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी**" के नाम से जाना जाता था, **1602** में स्थापित हुई और उसने अपनी पहली स्थायी व्यापारिक आधार **इंडोनेशिया** में स्थापित किया।*
- *भारत में उनका मुख्य आधार **पुलिकट (तमिलनाडु)** था, जिसे बाद में नागपट्टिनम ने बदल दिया।*
- *डचों का मुख्य उद्देश्य भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया से पुर्तगाली और ब्रिटिश व्यापारी शक्तियों को समाप्त करना*

था, और वे व्यापार में यूरोपीय सबसे शक्तिशाली शक्ति के रूप में पुर्तगालियों को बाहर करने में सफल रहे।

- उन्होंने 17वीं शताब्दी में पुर्तगालियों को हराया और पूर्व में यूरोपीय वाणिज्य में सबसे शक्तिशाली शक्ति बन गए।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी 1669 में अपने शिखर पर पहुंची, जब यह दुनिया की सबसे बड़ी निजी कंपनी थी, जिसमें 150 वाणिज्यिक जहाज, 40 युद्धपोत, 50 हजार कर्मचारी और दस हजार सैनिक थे।
- 1741 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी और त्रावणकोर राज्य की सेना के बीच कोलाचल की लड़ाई भारत में सबसे महत्वपूर्ण घटना थी।
- यह एक महत्वपूर्ण यूरोपीय शक्ति की हार थी, और इसने डच प्रभुत्व के अंत का संकेत दिया।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी को 1800 में भ्रष्टाचार और दिवालियापन के कारण समाप्त कर दिया गया।

हालांकि भारत में डच प्रभाव कम हो गया था, वे इंडोनेशिया में अभी भी शक्तिशाली रहे।

1623 में डचों ने पुर्तगालियों को **मलक्का जलडमरूमध्य और इंडोनेशियाई द्वीपों** से बाहर कर दिया और इंग्लैंड के वहां बसने के प्रयासों को विफल कर दिया।

➢ डचों का उत्थान

- डचों को व्यापारिक हितों ने पूर्व की यात्रा करने के लिए प्रेरित किया। **1596 में, कॉर्नेलिस डे हाउटमैन** पहले डच नागरिक बने जिन्होंने **सुमात्रा और बंताम** में कदम रखा।
- नीदरलैंड्स के स्टेट्स-जनरल ने 1602 में विभिन्न व्यापारिक कंपनियों को मिलाकर नीदरलैंड्स की ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई।
- इस समूह को युद्ध छेड़ने, संधि वार्ता करने, भूमि हड़पने और किलों का निर्माण करने का अधिकार भी दिया गया।
- **1616 ईस्वी में डच सूरत की स्थापना** की गई, और 1627 ईस्वी में डच बंगाल की स्थापना की गई।
- 1656 ईस्वी में, डचों ने पुर्तगालियों से श्रीलंका (सीलोन) छीन लिया। 1661 ईस्वी में, उन्होंने **मालाबार** तट पर स्थित पुर्तगाली किलों को भी कब्जा कर लिया।
- डचों ने जल्दी ही एक शक्तिशाली सेना का रूप लिया, और पुर्तगालियों से **मद्रास (चेन्नई)** के पास **नागापट्टनम** पर विजय प्राप्त कर, दक्षिण भारत में अपनी स्थिति मजबूत की।
- पैसे के मामले में, उन्होंने काली मिर्च और मसालों के बाजार पर एकाधिकार करके बहुत पैसा कमाया।
- कपास, नील, रेशम, चावल और अफीम मुख्य भारतीय सामान थे जिनका डचों ने व्यापार किया।

➢ डच बस्तियाँ

- डचों ने 1605 में मसुलीपट्टनम (आंध्र) में अपना पहला कारखाना स्थापित किया।

पुर्तगालियों से नागापट्टनम (चेन्नई के पास) पर कब्जा किया और इसे दक्षिण भारत में अपना मुख्य किलेदार बना लिया।

- डचों ने कोरमंडल तट, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बंगाल और बिहार में कारखाने स्थापित किए।
- 1609 में, उन्होंने मद्रास के उत्तर में पलिकट में एक कारखाना खोला। भारत में उनके अन्य प्रमुख कारखाने सूरत (1616), बिमलीपट्टनम (1641), करैकल (1645), चिनसुरा (1653), बारानगर, कासीमबाजार (मुरशीदाबाद के पास), बालासोर, पटना, नागापट्टम (1658), और कोच्चि (1663) में थे।
- वे यमुना घाटी और मध्य भारत में उत्पादित नील, बंगाल, गुजरात और **कोरोमंडल** से वस्त्र और रेशम, **बिहार से शोरा**, और गंगा घाटी से अफीम और चावल ले जाते थे।

➢ एंग्लो-डच प्रतिद्वंद्विता

- इस समय अंग्रेज़ भी पूर्वी व्यापार में महत्त्व प्राप्त कर रहे थे, जिससे डचों के आर्थिक हितों को गंभीर खतरा उत्पन्न हुआ।
- वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा जल्दी ही खून-खराबे में बदल गई।
- वर्षों की लड़ाई के बाद, दोनों पक्ष 1667 में एक समझौते पर पहुंचे, जिसमें ब्रिटिशों ने इंडोनेशिया पर सभी दावे छोड़ने का वचन दिया और डचों ने भारत छोड़ने पर सहमति जताई ताकि वे इंडोनेशिया में अपने अधिक सफल व्यापार पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- डचों के पास काली मिर्च और मसालों के व्यापार पर एकाधिकार था। रेशम, कपास, नील, चावल और अफीम प्रमुख भारतीय सामान थे, जिन्हें डचों ने बेचा।
- इसके अलावा, **एंग्लो-डच प्रतिस्पर्धा** लगभग सात साल तक चली, इस दौरान डचों ने एक-एक करके अपनी उपनिवेशों को ब्रिटिशों को खो दिया, और अंततः 1759 में बेदारा की लड़ाई में डचों को अंग्रेज़ों से हार का सामना करना पड़ा।

➢ भारत में डचों का पतन

- अंग्रेज़ों की प्रतिशोधात्मक कार्रवाई के कारण डचों को **1759 में हुगली की लड़ाई** में हार का सामना करना पड़ा, जिससे भारत में डचों की महत्वाकांक्षाएँ समाप्त हो गईं।

तीसरा एंग्लो-डच युद्ध (1672-74)।

- डचों का भारत में साम्राज्य स्थापित करने में कोई रुचि नहीं थी; उनका मुख्य ध्यान व्यापार पर था।
- किसी भी मामले में, उनका मुख्य आर्थिक हित इंडोनेशियाई मसाले द्वीपों में था, जहाँ से उन्होंने बड़ा लाभ कमाया।
- बेदारा की लड़ाई-1759 में अंग्रेज़ों ने डचों को हराया।

- **कोलाचल युद्ध 1741**
- अगस्त 1741 में, **त्रावणकोर राज्य** और डच ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच कोलाचल (कोलाचल) युद्ध लड़ा गया।
- **निष्कर्ष**

डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में कस्बों और वाणिज्यिक संचालन पर नियंत्रण किया, जिन्हें डच उपनिवेश के रूप में जाना जाता था। डच इंडिया एक भौगोलिक स्थान था, न कि राजनीतिक शक्ति। पुर्तगालियों और अंग्रेजों की तुलना

एक संघ बनाया ताकि अंग्रेजों से बंगाल को फिर से प्राप्त किया जा सके।

- **बक्सर की लड़ाई की घटनाएँ**
- यह भारतीय उपमहाद्वीप की पहली बड़ी हारों में से एक थी, जिसमें मुगलों, अवध और मीर कासिम की 40,000 सैनिकों की संयुक्त सेना को ब्रिटिश सेना के केवल 10,000 सैनिकों ने **बेरहमी** से हरा दिया।
- इस हार का मुख्य कारण तीन प्रमुख अलग-अलग सहयोगियों के बीच समन्वय की कमी थी।
- जब **मिर्जा नजफ खान** ने सुबह के समय ब्रिटिश सेना पर हमला करने के लिए मुगल सेना के पहले मोर्चे का नेतृत्व किया, तो मेजर हेक्टर ने केवल बीस मिनट में ब्रिटिश लाइनों का गठन कर लिया और मुगलों की प्रगति को रोक दिया।
- इसके परिणामस्वरूप, मुनरो ने ब्रिटिश सेना को स्तंभों में विभाजित कर दिया और मुगल वज़ीर-ए-आजम शुजाउद्दौला, अवध के नवाब, का पीछा किया, जिन्होंने नदी पार करने के बाद अपनी नाव पुल को उड़ा दिया।
- इसका अनपेक्षित परिणाम यह हुआ कि मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय और उनकी रेजिमेंट ने युद्ध छोड़ दिया।
- **इतिहासकार जॉन विलियम फोर्टेस्क्यू** के अनुसार, इस लड़ाई में ब्रिटिशों को 847 हताहतों का सामना करना पड़ा, जबकि भारतीय सहयोगियों ने 2000 सैनिक खो दिए।
- इसके बाद मुनरो ने मराठों की सहायता करने का निर्णय लिया, जिन्हें एक "**युद्धप्रिय जाति**" के रूप में वर्णित किया गया था, जो मुगल साम्राज्य और उसके नवाबों के प्रति अपनी अडिग घृणा के लिए जाने जाते थे।

- **बक्सर की लड़ाई के प्रतिभागी**

मीर कासिम

- उन्होंने अंग्रेजों द्वारा "**दस्तक**" और "**फरमानों**" के उपयोग का विरोध किया।
- उन्होंने अवध के नवाब और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के साथ गठबंधन करके उनके खिलाफ साजिश रची।

शुजाउद्दौला

- वे अवध के नवाब थे।
- उन्होंने मीर कासिम और शाह आलम द्वितीय के साथ एक महासंघ बनाया।

शाह आलम द्वितीय

- वे मुगल सम्राट थे।
- उनकी इच्छा थी कि अंग्रेजों को बंगाल से बाहर कर दिया जाए।

हेक्टर मुनरो

- वे ब्रिटिश सेना के मेजर थे।
- उन्होंने बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजी पक्ष का नेतृत्व किया।

- **रॉबर्ट क्लाइव**
- उन्होंने बक्सर युद्ध जीतने के बाद शुजाउद्दौला और शाह आलम द्वितीय के साथ समझौते किए।

बक्सर की लड़ाई के परिणाम

- 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर में, मीर कासिम, अवध के नवाब और शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना ने हरा दिया।
- मीर कासिम के खिलाफ अंग्रेजों का अभियान छोटा लेकिन प्रभावशाली था।
- इस युद्ध का महत्व इस तथ्य में निहित है कि अंग्रेजों ने न केवल बंगाल के नवाब को हराया, बल्कि भारत के मुगल सम्राट को भी पराजित किया।
- इस जीत ने अंग्रेजों को उत्तरी भारत में एक प्रमुख शक्ति और पूरे देश पर वर्चस्व के दावेदार के रूप में स्थापित कर दिया।
- युद्ध के बाद, मीर जाफर, जिन्हें 1763 में मीर कासिम और कंपनी के बीच संबंध खराब होने के बाद नवाब नियुक्त किया गया था, ने अंग्रेजों को मिदनापुर, बर्दवान और चटगांव के जिले सेना के रखरखाव के लिए सौंपने पर सहमति दी।
- अंग्रेजों को बंगाल में कर मुक्त व्यापार की अनुमति दी गई, केवल 2% नमक कर को छोड़कर।
- मीर जाफर की मृत्यु के बाद, उनके नाबालिग पुत्र **नजीमुद्-दौला** को नवाब नियुक्त किया गया, लेकिन प्रशासन की वास्तविक शक्ति नायब-सूबेदार के पास थी, जिसे अंग्रेज नियुक्त या बर्खास्त कर सकते थे।
- बक्सर की लड़ाई में ब्रिटिश विजय ने "एक ही झटके में" उत्तरी भारत में मुग़ल सत्ता के तीन मुख्य स्तंभों को समाप्त कर दिया। मीर क़ासिम गरीबी और गुमनामी में खो गया। शाह आलम द्वितीय ने ब्रिटिशों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और शुजा-उद-दौला पश्चिम की ओर भाग निकला, लेकिन विजेताओं द्वारा उसका पीछा किया गया। पूरी गंगा घाटी कंपनी की दया पर आ गई; अंततः शाह शुजा ने आत्मसमर्पण कर दिया। 1765 तक, ब्रिटिश बंगाल, बिहार और उड़ीसा के वास्तविक शासक बन गए। रॉबर्ट क्लाइव बंगाल के पहले गवर्नर बने।

➢ **इलाहाबाद संधि (1764 ई.)**

- इलाहाबाद संधि 16 अगस्त 1765 को मुग़ल सम्राट शाह आलम द्वितीय (मृत सम्राट आलमगीर द्वितीय के पुत्र) और ईस्ट इंडिया कंपनी के रॉबर्ट क्लाइव के बीच बक्सर की लड़ाई (23 अक्टूबर 1764) के बाद हस्ताक्षरित हुई। यह संधि मुग़ल साम्राज्य के बंगाली मुस्लिम लेखक और राजनयिक इ'तिसाम-उद-दीन द्वारा लिखी गई थी। इस संधि ने भारत में ब्रिटिश शासन की राजनीतिक और संवैधानिक भागीदारी और शुरुआत को चिह्नित किया।
- 1765 में, रॉबर्ट क्लाइव ने इलाहाबाद में नवाब शुजा-उद-दौला और सम्राट शाह आलम द्वितीय के साथ दो संधियाँ कीं।

नवाब अवध के साथ पहली संधि के तहत -

- इलाहाबाद और कड़ा को नवाब ने मुग़ल सम्राट शाह आलम द्वितीय को सौंप दिया।
- कंपनी को युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में 50 लाख रुपये का भुगतान किया गया।
- बनारस के ज़मींदार बलवंत सिंह को उनकी जागीर पर पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया।

शाह आलम द्वितीय के साथ दूसरी संधि के तहत -

- सम्राट से इलाहाबाद में कंपनी की सुरक्षा में रहने का अनुरोध किया गया।
- बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी ईस्ट इंडिया कंपनी को वार्षिक भुगतान के रूप में 26 लाख रुपये के बदले प्रदान की गई।
- मुग़ल सम्राट द्वारा कंपनी को 53 लाख रुपये की राशि दी जानी थी, जिसके बदले कंपनी इन प्रांतों के निज़ामत कार्य (सैन्य रक्षा, पुलिस, और न्याय प्रशासन) का निर्वहन करेगी।

> **नोट:**
> कर्नाटक युद्ध (1740-48, 1749-53 और 1758-63), प्लासी की लड़ाई (1757) और बक्सर की लड़ाई (1764) के महत्व में मुख्य अंतर यह है:
> ***कर्नाटक युद्ध*** ने भारत में व्यापार के क्षेत्र में ब्रिटिश वर्चस्व स्थापित किया।
> ***प्लासी की लड़ाई*** ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखी।
> ***बक्सर की लड़ाई*** ने ब्रिटिशों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा का स्वामी बना दिया और उन्हें उत्तरी भारत की एक महान शक्ति और पूरे देश में सर्वोच्चता के दावेदार के रूप में स्थापित किया।

➢ ***बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली (1765-72)***

रॉबर्ट क्लाइव 1765 में बंगाल के पहले गवर्नर बने। बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली रॉबर्ट क्लाइव की परिकल्पना थी, जिसे उन्होंने इलाहाबाद संधि (1765) के बाद स्थापित किया। इस प्रणाली के तहत बंगाल का प्रशासन दो भागों में विभाजित किया गया - ***दीवानी*** और ***निज़ामत***।

- ***दीवानी*** का अर्थ है राजस्व संग्रह का अधिकार, जो कंपनी को दिया गया। दीवानी (आर्थिक अधिकार) कंपनी द्वारा संचालित की गई, इसलिए कंपनी दीवान थी।
- ***निज़ामत*** का अर्थ है प्रशासनिक अधिकार, जो नवाब को दिए गए। निज़ामत (क्षेत्रीय अधिकार) इन कमजोर भारतीय शासकों द्वारा संचालित की गई, इसलिए वे निज़ाम थे।

मुख्य बिंदु:

- बक्सर की लड़ाई के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल में अपने को वास्तविक शासक के रूप में स्थापित कर लिया।
- रॉबर्ट क्लाइव ने बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली स्थापित की, जिसमें दो शक्तियां - कंपनी और नवाब - शामिल थीं। इसके तहत दीवानी (राजस्व संग्रह) और निज़ामत (पुलिस और न्यायिक कार्य) दोनों पर कंपनी का नियंत्रण था।
- दीवान के रूप में कंपनी दीवानी अधिकारों का उपयोग करती थी और निज़ामत अधिकारों का प्रयोग डिप्टी सुबेदार को नामित करने के अपने अधिकार के माध्यम से करती थी।
- कंपनी ने दीवानी और निज़ामत कार्य सम्राट और बंगाल के सुबेदार से प्राप्त किए।
- इस प्रणाली से कंपनी को काफी लाभ हुआ।
- यह प्रणाली भारतीय कठपुतली शासकों को अधिकार का आभास देती थी, जबकि वास्तविक संप्रभु सत्ता कंपनी के हाथों में रहती थी।
- ***नवाब*** पर शांति और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी थी, लेकिन उन्हें इसके लिए कंपनी पर निर्भर रहना पड़ता था, क्योंकि सेना और राजस्व दोनों पर कंपनी का नियंत्रण था।
- कंपनी ने दीवानी कार्यों को अंजाम देने के लिए दो डिप्टी दीवान नियुक्त किए: बंगाल के लिए मोहम्मद रज़ा खान और बिहार के लिए राजा सीताब राय।
- मोहम्मद रज़ा खान उप नाज़िम या सुबेदार के रूप में भी कार्यरत थे।
- दोहरी शासन प्रणाली ने प्रशासनिक तंत्र को ध्वस्त कर दिया, जिससे बंगाल की जनता के लिए यह विनाशकारी सिद्ध हुआ।
- न कंपनी और न ही नवाब प्रशासन या जनकल्याण के प्रति चिंतित थे।
- 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने दोहरी शासन प्रणाली को समाप्त कर दिया।
- इस प्रकार, ***अलग दीवान और निज़ाम*** की यह प्रणाली ***दोहरी प्रशासन प्रणाली*** कहलाती है। हालांकि, वास्तविक सत्ता निज़ामत में भी ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में थी।

प्रमुख प्रभाव:

- इस प्रणाली का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह था कि भारतीय व्यापारियों की स्थिति भिखारियों जैसी हो गई। एक ओर, ब्रिटिश शुल्क मुक्त व्यापार का आनंद लेते रहे; दूसरी ओर, भारतीय व्यापारियों को लगभग 40% राजस्व का भुगतान करना पड़ता था।
- किसान अब ब्रिटिश राजस्व संग्रह के अधीन थे। ब्रिटिशों ने प्रत्येक पैसे को वसूलने में कोई कसर नहीं छोड़ी। विकास के नाम पर कोई गतिविधि नहीं थी, जिससे किसान भिखारी बनने को मजबूर हो गए।
- नई भ्रमित प्रशासनिक प्रणाली, जो सही तरीके से स्थापित नहीं की गई थी, ने अराजकता पैदा कर दी।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों, जैसे लॉर्ड क्लाइव, ने गुप्त निजी व्यापार के कारण अत्यधिक संपत्ति अर्जित की।

- यह भारत से आर्थिक लूट की शुरुआत थी, जिसने इंग्लैंड को 19वीं और 20वीं शताब्दी में दुनिया का सबसे धनी देश बना दिया। देश के उत्पादन पर इस सतत शोषण का प्रभाव जल्द ही महसूस होने लगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार, बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली बुरी तरह विफल रही। इसने बंगाल के व्यापार, उद्योग और कृषि को नष्ट कर दिया।

- 1770 में, बंगाल में एक भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें बंगाल की लगभग एक-तिहाई आबादी इसकी चपेट में आ गई।
- हालांकि इसका मुख्य कारण वर्षा की विफलता था, इसमें कोई संदेह नहीं है कि "दोहरी शासन प्रणाली" के तहत बंगाल के कुप्रशासन के कारण जनता की पीड़ा कई गुना बढ़ गई।
- कंपनी भी अपने प्रशासन की बुराइयों से अछूती नहीं रही। उसके राजस्व और व्यापार दोनों से होने वाली आय को नुकसान हुआ।
- निजी व्यापार का चलन, जो इसके कर्मचारियों की प्राथमिक चिंता बना रहा, कंपनी की किस्मत के लिए भी विनाशकारी साबित हुआ।
- इस प्रकार, बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली शर्मनाक रूप से विफल रही।

दोहरी / द्वैध शासन प्रणाली का उन्मूलन

1772 में जब वॉरेन हेस्टिंग्स कंपनी के गवर्नर-जनरल के रूप में भारत आए, तो उन्हें निदेशक मंडल से दोहरी शासन प्रणाली को समाप्त करने का स्पष्ट आदेश मिला था। उन्हें निर्देश मिला था कि नायब (डिप्टी) दीवान, मोहम्मद रजा खान और राजा शिताब राय को उनके पदों से हटा दिया जाए और उनके खिलाफ मुकदमा चलाया जाए। इसके बाद कंपनी को स्वयं दीवान के रूप में कार्य करना था। हेस्टिंग्स ने भारत आने के तुरंत बाद यही किया। उन्होंने दीवानी (राजस्व संग्रह का अधिकार) के साथ-साथ नागरिक न्याय का कार्य भी कंपनी के हाथों में ले लिया।

- हेस्टिंग्स ने यह महसूस किया कि दीवानी और निज़ामत (रक्षा, शांति और आपराधिक न्याय के अधिकार) को अलग-अलग हाथों में रखना उचित नहीं था। इसलिए, उन्होंने नवाब से निज़ामत का अधिकार भी छीन लिया। बंगाल के नवाब को उनके व्यक्तिगत खर्चों के लिए वार्षिक सोलह लाख रुपये की पेंशन प्रदान की गई। इस प्रकार, बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली समाप्त कर दी गई और कंपनी बंगाल, बिहार और उड़ीसा की **कानूनी** और **वास्तविक** शासक बन गई।

➢ **मैसूर का विजय अभियान**

- हैदर अली, जो मैसूर सेना के एक फ़ौजदार के पुत्र थे, का जन्म लगभग 1721 ईस्वी में हुआ। अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ निश्चय से वह सेना का सेनापति बन गया। जब मैसूर के शासक की मृत्यु हो गई, तो उन्होंने स्वयं को शासक घोषित कर दिया और मैसूर के सुल्तान बन गए। वह एक कुशल सेनापति थे और उन्होंने अपनी सेना को मजबूत बनाने के लिए फ्रांसीसी सैनिकों को शामिल किया।

पहला आंग्ल-मैसूर युद्ध (लगभग 1767–1769 ईस्वी)

- हैदर अली के तेजी से बढ़ते प्रभाव ने हैदराबाद के निज़ाम, मराठों और अंग्रेजों में ईर्ष्या पैदा कर दी। इन तीनों ने मिलकर एक गठबंधन बनाया और हैदर अली पर युद्ध घोषित कर दिया।
- कूटनीति के माध्यम से, हैदर अली ने मराठों और हैदराबाद के निज़ाम को अपने पक्ष में कर लिया और पहला आंग्ल-मैसूर युद्ध अंग्रेजों की हार के साथ समाप्त हुआ।
- युद्ध के अंत में, मद्रास की संधि पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के विजय क्षेत्रों को वापस कर दिया और तीसरे पक्ष के आक्रमण की स्थिति में पारस्परिक सहायता का वादा किया।

दूसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध (लगभग 1780–1784 ईस्वी)

- 1771 ईस्वी में, हैदर अली पर मराठों ने आक्रमण किया, लेकिन अंग्रेजों ने उनकी मदद नहीं की, जिससे मद्रास की संधि का उल्लंघन हुआ। इस कारण हैदर अली का ब्रिटिशों पर से विश्वास उठ गया और वह उन पर प्रहार का अवसर ढूंढने लगे।
- जब महे, जो हैदर अली के अधीन फ्रांसीसी क्षेत्र था, पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया, तो हैदर अली ने 1780 ईस्वी में अंग्रेजों पर युद्ध की घोषणा कर दी।
- हैदर अली ने कर्नाटक में ब्रिटिश सेनाओं को लगातार हराया और उन्हें बड़ी संख्या में आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने जल्द ही लगभग पूरे कर्नाटक पर कब्जा कर लिया।
- लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग्स ने कूटनीति का उपयोग करते हुए हैदर अली, हैदराबाद के निज़ाम और मराठों के गठबंधन को तोड़ दिया। उन्होंने मराठों से शांति की और निज़ाम को गुंटूर जिले को देकर रिश्वत दी।
- 1781 ईस्वी में, आयर कूट के नेतृत्व में अंग्रेजों ने हैदर अली को पोर्टो नोवो में पराजित किया।
- 1782 ईस्वी में हैदर अली की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र टीपू सुल्तान ने युद्ध जारी रखा।
- **दूसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध** मैंगलोर की संधि के साथ समाप्त हुआ, जिसके अनुसार सभी विजय क्षेत्रों को आपस में बहाल कर दिया गया और दोनों पक्षों के बंदियों को मुक्त कर दिया गया।

तीसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध (लगभग 1790–1792 ईस्वी)

- तत्कालीन गवर्नर-जनरल लॉर्ड कॉर्नवालिस ने चतुर कूटनीति के माध्यम से टीपू सुल्तान को अलग-थलग करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने मराठों, निज़ाम और त्रावणकोर व कुर्ग के शासकों को अपने पक्ष में कर लिया।

- राष्ट्रवादी मांग के जवाब में, 1919 के भारत सरकार अधिनियम ने अंततः ICS के लिए भारत में अलग, लेकिन एक साथ आयोजित न होने वाली भर्ती परीक्षा का प्रावधान किया। परिणामस्वरूप, 1941 तक भारतीयों की संख्या सिविल सेवाओं में यूरोपियों से अधिक हो गई।

अध्याय - 7

आधुनिकता के संस्थान - शिक्षा और प्रेस

शिक्षा स्वतंत्रता का स्वर्णिम द्वार खोलने का एक सशक्त उपकरण है, जो दुनिया को बदल सकता है। भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ, उनकी नीतियों और उपायों ने पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों की विरासत को तोड़ दिया, जिससे अधीनस्थों का एक वर्ग बनाने की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीय समाज पर अंग्रेज़ी रंग चढ़ाने के लिए कई अधिनियम लागू किए।

ब्रिटिश पहल पर आधारित शिक्षा नीति के विकास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

- **प्रथम चरण (1758-1812)**
- **द्वितीय चरण (1813-1853)**
- **तृतीय चरण (1854-1900)**
- **चतुर्थ चरण (1901-1920)**

शुरुआत में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी शिक्षा प्रणाली के विकास को लेकर चिंतित नहीं थी, क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य व्यापार और मुनाफा कमाना था। भारत में शासन करने के लिए उन्होंने उच्च और मध्यम वर्ग के एक छोटे वर्ग को शिक्षित करने की योजना बनाई, ताकि एक ऐसा वर्ग तैयार किया जा सके जो "रक्त और रंग से भारतीय हो लेकिन स्वाद में अंग्रेज़ी" हो। यह वर्ग सरकार और जनता के बीच दुभाषिया के रूप में कार्य करता। इसे "**निम्न स्तरीय छनाव सिद्धांत / अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत**" **(Downward Filtration Theory)** भी कहा जाता था।

भारत में ब्रिटिश काल के दौरान शिक्षा के कालानुक्रमिक विकास पर नीचे चर्चा की गई है -

➢ पहला चरण (1758 - 1812)

- भारत में अपने शासन के पहले 60 वर्षों तक, ईस्ट इंडिया कंपनी, एक व्यापार और मुनाफा कमाने वाली संस्था, ने शिक्षा को बढ़ावा देने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस अवधि के दौरान अपनी प्रजा की शिक्षा में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई, कुछ अपवाद इस प्रकार हैं:
- कलकत्ता मदरसा की स्थापना 1781 में वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा मुस्लिम कानून और फ़ारसी और अरबी विषयों के अध्ययन और शिक्षण के लिए की गई थी। जब जोनाथन डंकन रेजिडेंट थे, तब उन्होंने हिंदू कानून और दर्शन के अध्ययन के लिए वाराणसी में एक संस्कृत कॉलेज शुरू किया। दोनों को कंपनी की अदालतों में कानून के प्रशासन में मदद करने के लिए योग्य भारतीयों को सेवाओ के लिए तैयार करने के लिए स्थापित किया गया था |
- एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की स्थापना 1784 में विलियम जोन्स द्वारा कलकत्ता में की गई थी।

➢ दूसरा चरण (1813 - 1853)

1813 का अधिनियम और शिक्षा

1. मिशनरी कार्यकर्ता चार्ल्स ग्रांट और विलियम विल्बरफोर्स ने ईस्ट इंडिया कंपनी को अपनी अहस्तक्षेप नीति छोड़ने और पश्चिमी साहित्य पढ़ाने और ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा फैलाने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए मजबूर किया। इसलिए, ब्रिटिश संसद ने 1813 के चार्टर में एक खंड जोड़ा कि गवर्नर-जनरल-इन-काउंसिल ने शिक्षा के लिए एक लाख तक राशि दी और ईसाई मिशनरियों को भारत में अपने धार्मिक विचारों का प्रसार करने की अनुमति प्रदान की ।
2. **इस अधिनियम का महत्व** :- यह पहला अवसर था जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में शिक्षा के प्रचार को स्वीकार किया।
3. **राजा राम मोहन राय के प्रयासों से कलकत्ता कॉलेज** की स्थापना की गई, जहां पश्चिमी शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके साथ ही, कलकत्ता में तीन संस्कृत कॉलेज स्थापित किए गए।

सार्वजनिक शिक्षा की सामान्य समिति, 1823

1. यह समिति भारत में शिक्षा के विकास की देखरेख के लिए बनाई गई थी। इसमें प्राच्यावादियों (ओरिएंटलिस्टों) का प्रभुत्व था, जो प्राच्य शिक्षा के बड़े समर्थक थे, जबकि एंग्लिकन इसके विरोधी थे।
2. ओरिएंटलिस्टों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी पर पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अत्यधिक दबाव डाला।
3. इसके परिणामस्वरूप, भारत में शिक्षा का प्रसार **ओरिएंटलिस्ट-एंग्लिसिस्ट** के बीच विवादी हो गया, जब तक कि मैकॉले के प्रस्ताव ने ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत नहीं की।

लॉर्ड मैकॉले की शिक्षा नीति, 1835

1. इस नीति का उद्देश्य ऐसा शिक्षा तंत्र बनाना था जो केवल समाज के उच्च वर्ग को अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षित करे।
2. फारसी को अदालत की भाषा के रूप में समाप्त कर दिया गया और अंग्रेजी को अदालत की भाषा बना दिया गया।
3. अंग्रेजी पुस्तकों को मुफ्त छपाई की सुविधा दी गई और उन्हें बहुत कम कीमत पर उपलब्ध कराया गया।
4. प्राच्य शिक्षा की तुलना में अंग्रेजी शिक्षा के लिए अधिक धन आवंटित किया गया।
5. **1849 में, जे.ई.डी. बेथ्यून** ने **बेथ्यून स्कूल** की स्थापना की।
6. बिहार के पुसा में **कृषि संस्थान** की स्थापना की गई।
7. रुड़की में **इंजीनियरिंग संस्थान** की स्थापना की गई।

भारत की शिक्षा नीति के संबंध में प्राच्यवादियों और आंग्लवादियों के बीच विवाद

- भारत में शिक्षा नीति के उद्देश्यों, शिक्षा के माध्यम, शैक्षिक संस्थानों को व्यवस्थित करने वाली एजेंसियों और लोगों के बीच शिक्षा फैलाने के लिए अपनाए जाने वाले तरीकों के संबंध में प्राच्यवादियों और आंग्लवादियों के बीच तीव्र विवाद उत्पन्न हो गए। ये विवाद और विचारधाराएँ ज्यादातर कंपनी के यूरोपीय अधिकारियों के बीच पाई गईं। इस समय भारतीय राय लगभग नगण्य थी।
- प्राच्य दल का सबसे महत्वपूर्ण तर्क 1813 के चार्टर अधिनियम की धारा 43 की व्याख्या के इर्द-गिर्द केंद्रित था, और जो विवाद को और बढ़ाने के लिए भी जिम्मेदार था। जैसा कि पहले कहा गया है, इस धारा में निर्देश दिया गया था कि "**साहित्य के पुनरुद्धार और सुधार और भारत के विद्वान मूल निवासियों के प्रोत्साहन और भारत में ब्रिटिश क्षेत्रों के निवासियों के बीच विज्ञान के ज्ञान के परिचय और प्रचार**" के लिए हर साल एक लाख रुपये से कम की राशि खर्च की जाएगी। प्राच्य दल ने तर्क दिया कि जिस साहित्य को पुनर्जीवित और प्रोत्साहित किया जाना था, वह हिंदुओं और मुसलमानों का साहित्य था।
- विद्वान पुरुषों के प्रोत्साहन का मतलब था कि उन विद्वानों को सहायता दी जाएगी जो छात्रवृति से ओरिएंटल कॉलेजों में अध्ययन कर रहे थे और उनके उपयोग के लिए शास्त्रीय कार्यों को प्रकाशित किया गया । जहाँ तक विज्ञान के ज्ञान के परिचय और प्रचार का संबंध है, उन्होंने तर्क दिया कि पश्चिमी ज्ञान और विज्ञान उन्हें शास्त्रीय भाषाओं (या आधुनिक भारतीय भाषाओं) के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए और इसके साथ ही उन्हें अपनी मूल संस्कृति भी सिखाई जानी चाहिए जिसके लिए उनके मन में बहुत प्रेम और सम्मान था। इसलिए, उन्होंने सुझाव दिया कि जनरल कमेटी ऑफ़ पब्लिक इंस्ट्रक्शंस द्वारा अंग्रेजी से अरबी और संस्कृत में उपयोगी पुस्तकों का अनुवाद करने की कार्रवाई पूरी तरह से उचित थी।
- प्राच्य दल (ओरिएंटल पार्टी) चाहता था कि प्राच्य विद्या के मौजूदा कुशल निर्देशों को किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं किया जाना चाहिए। प्राच्य समूह के नेता प्रिंसेप विशेष रूप से कलकत्ता मदरसा में रुचि रखते थे। प्राच्यवादियों ने इस विचार पर भी सहमति व्यक्त की कि छात्रों को स्वयं शास्त्रीय या अंग्रेजी शिक्षा चुनने का विकल्प दिया जाना चाहिए। इसलिए, प्राच्य दल ने बनाए रखा कि उनकी कार्रवाइयाँ पूरी तरह से 1813 के चार्टर अधिनियम के भीतर थीं और उनकी नीति तब तक नहीं बदली जा सकती जब तक कि अधिनियम को स्वयं संसद द्वारा संशोधित नहीं किया जाता।
- प्राच्य दल (ओरिएंटल पार्टी) द्वारा दिए गए अन्य तर्क इतने भारी नहीं थे और उनका कोई खास महत्व नहीं था। उदाहरण के लिए, यह तर्क दिया गया था कि अंग्रेजी एक विदेशी भाषा होने के कारण, भारत के लोगों द्वारा आसानी से महारत हासिल नहीं की जा सकेगी और लोगों पर अंग्रेजी भाषा थोपना उनके आक्रोश को भड़काएगा, इत्यादि। ये तर्क सरकार को समझाने

वाले नहीं थे क्योंकि भारतीय अंग्रेजी भाषा में महारत हासिल करने की अपनी क्षमता का बढ़ता हुआ प्रमाण दे रहे थे। राजा राम मोहन राय जैसे भारतीयों ने अंग्रेजी शिक्षा के महत्व को समझा और भारत में इसकी शुरुआत का समर्थन किया।

- आंग्लवादियों के अनुसार, शिक्षा की प्राच्य प्रणाली धीमी और हानिकारक थी। वे प्राच्य विद्या के पुराने भंडार पर नई पश्चिमी शिक्षा को थोपने के विचार से समझौता नहीं कर सके। उन्होंने अंग्रेजी के माध्यम से भारतीयों के बीच पश्चिमी विज्ञान और साहित्य के प्रसार के विचार का तर्क दिया। जैसा कि वे अपने दृढ़ विश्वास में दृढ़ थे, इसलिए उन्होंने पश्चिमी शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य के लिए पूरे शैक्षिक अनुदान का उपयोग करने की इच्छा जताई। इन परिस्थितियों में, इन दो विचारधाराओं के बीच के विवाद को जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन द्वारा सरकार को भेजा गया था।

- **<u>भारत में शिक्षा के लिए मैकॉले का प्रस्ताव (Macaulay's Minutes)</u>**
- लॉर्ड मैकॉले 10 जून 1834 को भारत आए और गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद के विधि सदस्य बने। उन्हें जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन के अध्यक्ष के रूप में ओरिएंटलिस्ट और एंग्लिसाइज के बीच चल रहे विवाद को सुलझाने का जिम्मा सौंपा गया। फरवरी 1835 में, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध सिफारिशें परिषद के समक्ष प्रस्तुत कीं, जिन्हें लॉर्ड बेंटिक ने मंजूरी दी। इसके बाद मार्च 1835 में एक प्रस्ताव पारित किया गया।
- ***यूरोपीय साहित्य और विज्ञान का प्रचार-प्रसार*** - ब्रिटिश सरकार का मुख्य उद्देश्य भारत के निवासियों के बीच यूरोपीय साहित्य और विज्ञान का प्रचार होना चाहिए। "शिक्षा के लिए आवंटित धन केवल अंग्रेजी शिक्षा पर ही खर्च किए जाना चाहिए।"
- ***छात्रवृत्ति पर प्रतिबंध*** - सभी मौजूदा प्रोफेसरों और छात्रों को उनके शिक्षण संस्थानों में छात्रवृत्ति मिलती रहेगी, लेकिन भविष्य में इन संस्थानों में प्रवेश लेने वाले किसी भी छात्र को छात्रवृत्ति नहीं दी जाएगी।
- ***ओरिएंटल साहित्य पर खर्च बंद*** - सरकार के धन को ओरिएंटल (प्राच्य) साहित्य के प्रकाशन पर खर्च नहीं किया जाएगा।
- ***अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान पर ध्यान केंद्रित*** - सरकार के पास मौजूद धन अब से भारतीयों को अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान का ज्ञान देने में खर्च किया जाएगा |
- ***<u>मैकॉले के तर्क</u>***

  एंग्लिसाइज द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के समर्थन में दिए गए तर्क मैकॉले के प्रस्तावों में अपनी सर्वोत्तम व्याख्या पाते हैं। वह एंग्लिसाइज के पक्ष में थे और अपने प्रस्तावों में उन्होंने भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा को बनाने का समर्थन पूरी शक्ति के साथ किया।
- ***चार्टर एक्ट की धारा 43 की व्याख्या*** - मैकॉले के अनुसार, 'साहित्य' (Literature) का अर्थ अंग्रेजी साहित्य है और "भारत के विद्वान नागरिक" (Learned Natives of India) का तात्पर्य उन भारतीयों से है जिन्होंने पश्चिमी विज्ञान और ज्ञान प्राप्त किया है।
- मैकॉले ने भारतीय विद्वान को उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया था जिसने लॉक के दर्शन और मिल्टन की कविता सीखी हो।
- ओरिएंटल स्कूलों को अनुदान रोकने का अर्थ था कि यदि सरकार महसूस करती कि उसकी पुरानी शैक्षिक नीति असफल हो गई है, तो वह अपनी नीति बदल सकती है और अनुदान रोक सकती है।
- मैकॉले का तर्क था कि अंग्रेजी का ज्ञान भारतीयों को दूर-दराज देशों के साथ वाणिज्यिक संपर्क स्थापित करने में सक्षम बनाएगा, क्योंकि "अंग्रेजी भाषा समुद्र के पार व्यापार की भाषा बन सकती है।"
- मैकॉले का तर्क था कि भारतीयों द्वारा अंग्रेजी सीखना प्रशासन के दृष्टिकोण से लाभकारी होगा।

<u>मैकॉले के प्रस्ताव की आलोचना</u>

मैकॉले के प्रस्ताव की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की गई थी।

- मैकॉले का यह दावा कि अंग्रेजी ही केवल शिक्षा का माध्यम हो सकती है, सही नहीं ठहराया जा सकता।
- यह मानना गलत है कि मैकॉले ही भारत में नई शैक्षिक नीति का परिचय कराने के लिए जिम्मेदार थे।
- अन्य भारतीय भाषाओं की उपेक्षा की गई।
- उनका "***डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन सिद्धांत/ अधोगामी निस्पंदन सिद्धांत***" भारतीयों के लिए एक असफल प्रयास साबित हुआ।

<u>निष्कर्ष</u>

अंत में, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव में भारतीयों को पश्चिमी राजनीतिक प्रणालियों से संपर्क हुआ, लोकतांत्रिक प्रथाओं का अनुभव हुआ और भविष्य के लिए उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई। इसने भारतीयों को अंग्रेजों के जाने के बाद सफलता प्राप्त करने में मदद की।

➢ तीसरा चरण (1854 - 1900)

• वुड का डिस्पैच (1854)

- सर चार्ल्स वुड 1854 में कंपनी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष थे, जब उन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल ऑफ इंडिया, लॉर्ड डलहौज़ी को एक डिस्पैच भेजा।
- इसे भारत में अंग्रेजी शिक्षा का **'मैग्नाकार्टा'** कहा जाता है और इसमें भारत में शिक्षा फैलाने के लिए एक व्यापक योजना दी गई थी।

वुड के डेस्पैच की सिफारिशें:

- प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा प्रणाली को नियमित करना।
- यह राज्य की जिम्मेदारी है कि वह शिक्षा को जन-जन तक फैलाए।
- भारतीयों को अंग्रेजी और उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए।
- शिक्षा प्रणाली को हर प्रांत में स्थापित किया जाना चाहिए।
- हर जिले में कम से कम एक सरकारी स्कूल होना चाहिए।
- निजी स्कूलों को सहायता प्रदान की जा सकती है।
- महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए।
- मद्रास, कलकत्ता और बंबई विश्वविद्यालय 1857 तक स्थापित किए गए थे।
- पंजाब विश्वविद्यालय – 1882; इलाहाबाद विश्वविद्यालय – 1887
- इस डेस्पैच ने सरकार से लोगों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेने को कहा।
- यह शिक्षा के स्तर की एक श्रृंखला की सिफारिश करता है - सबसे नीचे स्थानीय प्राथमिक स्कूल; जिला स्तर पर एंग्लो-लोकल उच्च विद्यालय और संबद्ध कॉलेज, और कलकत्ता, बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी के विश्वविद्यालय।
- उच्च अध्ययन के लिए अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने और स्कूल स्तर पर स्थानीय भाषा को प्राथमिकता देने की सिफारिश की गई।

वुड के डिस्पैच में सिफारिशें:

I. **जिम्मेदारी का स्वीकृति:**

डिस्पैच में यह स्वीकार किया गया कि भारतीयों को शिक्षा देने की जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार की है।

II. **डी.पी.आई. कार्यालय की स्थापना:**

डिस्पैच ने सिफारिश की कि शिक्षा के लिए मौजूदा बोर्ड ऑफ कंट्रोल को समाप्त कर दिया जाए और राज्यों में पब्लिक इंस्ट्रक्शंस के निदेशक का कार्यालय स्थापित किया जाए।

III. **विश्वविद्यालयों की स्थापना:**

डिस्पैच ने प्रेसीडेंसी शहरों, जैसे कि कलकत्ता, बंबई और मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की। लंदन विश्वविद्यालय, जो तब केवल एक परीक्षा देने वाली संस्था थी, को उनके मॉडल के रूप में लिया जाना था।

IV. **शिक्षा का माध्यम:**

भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा। डिस्पैच ने लॉर्ड मैकाले के दृष्टिकोण को स्वीकार किया।

ग्रांट-इन-एड प्रणाली/ अनुदान-सहायता प्रणाली

डिस्पैच ने भारतीय शैक्षिक संस्थाओं के लिए ग्रांट-इन-एड प्रणाली प्रस्तावित की, ताकि भारतीयों में शिक्षा के विस्तार के लिए निजी प्रयासों को प्रोत्साहित किया जा सके।
ग्रांट-इन-एड प्राप्त करने के लिए, एक स्कूल को कुछ शर्तें पूरी करनी थीं, जैसे:

(a) स्कूल को धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
(b) इसे सरकारी अधिकारियों द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देनी चाहिए।
(c) स्कूल को विद्यार्थियों से एक ट्यूशन शुल्क लेना चाहिए, चाहे वह कितना भी कम हो।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

स्कूलों के लिए उचित रूप से योग्य शिक्षकों को सुनिश्चित करने के लिए, डिस्पैच ने सामान्य स्कूलों में शिक्षकों का प्रशिक्षण देने का सुझाव दिया। बेहतर गुणवत्ता के व्यक्तियों को स्कूल सेवा में लाने के लिए डिस्पैच ने शिक्षकों के लिए **'पर्याप्त वेतन'** की सिफारिश की।

महिला और मुस्लिम शिक्षा :-

चूंकि भारतीय समाज बहुत रूढ़िवादी था, ब्रिटिश सरकार ने महिलाओं की शिक्षा में कोई रुचि नहीं दिखाई। उसने धर्म में सख्त तटस्थता की नीति अपनाने पर जोर दिया।

व्यावसायिक शिक्षा

डिस्पैच ने व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया और इसके लिए व्यावसायिक कॉलेजों और औद्योगिक स्कूलों की स्थापना की आवश्यकता की सिफारिश की।

जन शिक्षा

डिस्पैच ने स्वीकार किया कि जन शिक्षा को पूरी तरह से नजरअंदाज किया गया था और अब तक सरकार ने अपनी पूरी ध्यान केवल उच्च वर्गों के लिए शिक्षा के साधन प्रदान करने पर केंद्रित किया था।

वुड के डिस्पैच का महत्व

वुड के डिस्पैच को भारतीय शिक्षा के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था। यह पहली बार था कि ब्रिटिश सरकार द्वारा एक व्यापक योजना प्रस्तुत की जा सकी। प्रो. एस.एन. मुखर्जी ने अपनी पुस्तक "भारत में शिक्षा का इतिहास" में लिखा, "**डिस्पैच वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसे 'भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्ना कार्टा' माना जाता था।**"

"यह डिस्पैच प्रकृति में इतना व्यापक है कि भारतीय शिक्षाविद अभी तक उन कार्यों को पूरा करने में सफल नहीं

हुए हैं, जो इसने निर्धारित किए थे। इसने एक ऐसी योजना प्रदान की जिसने इस देश के लिए शिक्षा की एक सामान्य योजना में अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की तुलनात्मक स्थिति को सही ढंग से परिभाषित करते हुए, भारतीय शिक्षा के सभी पहलुओं को छूने का प्रयास किया।"

वुड के डिस्पैच की सीमाएँ

डिस्पैच को देश की शिक्षा प्रणाली के कुछ स्पष्ट दोषों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था।

डिस्पैच की कुछ सीमाएँ निम्नलिखित हैं

- ब्रिटिश सरकार की केंद्रीकृत शिक्षा प्रणाली के लिए भारत के लोगों द्वारा कड़ी आलोचना की गई थी।
- भारतीय भाषाएँ और भारतीय संस्कृति पिछड़ी और उपेक्षित बनी रहीं। कुल मिलाकर, डिस्पैच ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव रखी।
- डिस्पैच ने केवल परीक्षा विश्वविद्यालयों की स्थापना का सुझाव दिया और शिक्षण विश्वविद्यालय के बारे में नहीं सोच सका।

निष्कर्ष:

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि डिस्पैच के प्रकाशन के तुरंत बाद, प्रचलित शिक्षा प्रणाली को नई लाइनों पर व्यवस्थित करने के लिए कदम उठाए गए। इस संबंध में एच.आर. जेम्स ने कहा, "1854 का डिस्पैच इस प्रकार भारतीय शिक्षा के इतिहास में चरमोत्कर्ष है: जो पहले होता है वह इसकी ओर ले जाता है, जो बाद में आता है वह इससे अनुसरण करता है"।

हंटर आयोग (1882-83)

1. इसकी स्थापना 1882 में डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर के अधीन 1854 के वुड डिस्पैच की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए की गई थी।
2. इसने प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा के विस्तार और सुधार में राज्य की भूमिका को रेखांकित किया।
3. इसने नियंत्रण को जिला और नगर पालिकाओं को हस्तांतरित करने को रेखांकित किया।
4. इसने माध्यमिक शिक्षा के दो विभाजन की सिफारिश की - विश्वविद्यालय तक साहित्यिक और वाणिज्यिक करियर के लिए व्यावसायिक।

➢ **चौथा चरण (1901 - 1920)**

लॉर्ड कर्ज़न को 1902 में सर थॉमस रैले (वाइसरॉय के कार्यकारी परिषद के कानून सदस्य) के तहत विश्वविद्यालय आयोग के रूप में नियुक्त किया गया था, और उनके प्रस्ताव पर 1904 का भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम ने विश्वविद्यालयों को शिक्षण कार्यों को अपनाने की अनुमति दी (अब तक ये मुख्य रूप से परीक्षा आयोजित करने वाले निकाय थे), संस्थानों का आवधिक निरीक्षण, कार्यों की तेज़ी से निपटान, संबद्धता के लिए सख्त शर्तें आदि। हालांकि, इसे राष्ट्रीयतावादियों द्वारा आलोचना का सामना करना पड़ा और 1910 में शिक्षा का एक अलग विभाग केंद्र में स्थापित किया गया।

सैडलर आयोग

- 7 नए विश्वविद्यालय खोले गए: बनारस, मैसूर, पटना, अलीगढ़, उस्मानिया, लखनऊ और ढाका।
- काशी विद्यापीठ और जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना की गई।
- विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम को पास कोर्स और ऑनर्स कोर्स में विभाजित किया गया।
- इसे कलकत्ता विश्वविद्यालय की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए गठित किया गया था और इसके सिफारिशें अन्य विश्वविद्यालयों पर भी लागू की गईं।
- उनकी टिप्पणियाँ इस प्रकार थीं

i. 12 वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम
ii. इंटरमीडिएट स्तर के बाद 3 वर्षीय डिग्री
iii. विश्वविद्यालयों का केंद्रीकृत कामकाज, एकात्मक आवासीय-शिक्षण स्वायत्त निकाय।
iv. अनुप्रयुक्त वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण और महिला शिक्षा के लिए विस्तारित सुविधाओं की सिफारिश की।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ईसाई मिशनरियों की आकांक्षा से प्रभावित थी। इसे प्रशासन और ब्रिटिश व्यापारिक प्रतिष्ठानों में अधीनस्थ पदों की संख्या बढ़ाने के लिए शिक्षित भारतीयों की सस्ती आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए डाला गया था। इसीलिए शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी पर जोर दिया गया और ब्रिटिश विजेताओं और उनके प्रशासन का महिमामंडन भी किया गया।

➢ **पाँचवां चरण (1921 - 1947)**

शिक्षा भारतीय नियंत्रण में आधिकारिक रूप से आई क्योंकि यह एक प्रांतीय विषय बन गई, जिसे प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा संचालित किया गया। विश्वविद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई (1947 में 20 विश्वविद्यालय); उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ (सैडलर आयोग की सिफारिशों पर); इंटर-यूनिवर्सिटी बोर्ड (1924) की स्थापना हुई और इंटर-कॉलेजिएट और इंटर-यूनिवर्सिटी गतिविधियों की शुरुआत हुई।

महिला शिक्षा और पिछड़े वर्गों की शिक्षा में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल हुईं।

हार्टोग समिति, 1929 ने कई सिफारिशें की जिनमें निम्नलिखित शामिल थीं

- प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण और सुधार की नीति।
- विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए चयनात्मक प्रणाली और औद्योगिक और वाणिज्यिक करियर की दिशा में पाठ्यक्रमों का विविधीकरण।
- विश्वविद्यालयों को सुधारने की आवश्यकता।

अध्याय – 12

1857 का विद्रोह

ब्रिटिशों के खिलाफ स्वतंत्रता की पहली जंग

- 1857-59 का भारतीय विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक व्यापक लेकिन असफल विद्रोह था, जो ब्रिटिश क्राउन की ओर से एक संप्रभु शक्ति के रूप में कार्य करती थी। 1857 का विद्रोह भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार के खिलाफ 1857 और 1858 के बीच एक महत्वपूर्ण विद्रोह था, जो ब्रिटिश क्राउन की ओर से एक संप्रभु शक्ति के रूप में कार्य करती थी।
- 1857 का विद्रोह ब्रिटिशों की उपनिवेशी तानाशाही के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम की चेतन शुरुआत था। 1857 के विद्रोह के लिए विभिन्न नाम हैं जैसे भारत की पहली स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह, आदि।
- यह विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ के छावनी शहर में कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के साथ शुरू हुआ, जो दिल्ली से 40 मील उत्तर-पूर्व में स्थित था। इसके बाद यह और विद्रोहों और नागरिक विद्रोहों में बदल गया, जो मुख्य रूप से ऊपरी गंगा के मैदान और मध्य भारत में थे, हालांकि उत्तर और पूर्व में भी विद्रोह की घटनाएं हुईं। यह विद्रोह बंगाल प्रेसीडेंसी के सिपाहियों द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ शुरू हुआ था।
- यह स्वतंत्रता संग्राम 10 मई 1857 को शुरू हुआ था। यह स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत का प्रतीक था। इसके बाद, भारत को सीधे ब्रिटिश सरकार द्वारा शासित किया गया, जो गवर्नर-जनरल के रूप में प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करती थी।

➢ 1857 के विद्रोह का पृष्ठभूमि

- 1757 में प्लासी की लड़ाई के बाद, ब्रिटिशों ने उत्तर भारत पर नियंत्रण प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम उठाया। और 1857 में एक बड़ा 'विद्रोह' हुआ, जो 1757 के बाद उपनिवेशी प्रशासन की प्रकृति और कार्यप्रणालियों का परिणाम था, और इसने ब्रिटिश नीति में भारत के प्रति महत्वपूर्ण बदलाव किए।
- समय के साथ, ब्रिटिश विस्तारवादी नीतियों, आर्थिक शोषण और प्रशासनिक नवाचारों का संयुक्त प्रभाव सभी पर पड़ा जैसे भारतीय राज्यों के शासकों, सिपाहियों, जमींदारों, किसानों, व्यापारियों, कारीगरों, गुरुओं, मौलवियों आदि।
- 1857 में, यह उबाल एक हिंसक तूफान में बदल गया जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को भारत में अपनी जड़ तक हिला दिया।
- हालांकि, 1757 और 1857 के बीच धार्मिक-राजनीतिक हिंसा, आदिवासी आंदोलनों, किसान विद्रोहों, कृषि दंगों और नागरिक विद्रोहों के रूप में समय-समय पर सार्वजनिक उफान आते रहे।
- यहां तक कि अकाल के वर्षों में, बढ़ी हुई राजस्व की उम्मीदों ने नाराजगी को भड़काया।
- क्योंकि साहूकारों को पुलिस का संरक्षण था, कई स्थानीय साहूकारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कंपनी के नियंत्रण के खिलाफ विद्रोहों में बदल गए।
- ब्रिटिशों द्वारा स्थानीय धार्मिक/पारंपरिक अनुष्ठानों में हस्तक्षेप ने असंतोष को जन्म दिया और विद्रोहों का कारण बना।
- विद्रोह और उथल-पुथल लगभग ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के शुरुआत से ही विभिन्न कारणों और स्थानों पर होते रहे।
- 1857 के विद्रोह के बाद भी, कुछ आंदोलन जारी रहे।
- दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और उत्तर-पूर्वी जिलों में बड़े विद्रोह भड़क उठे, जिन्हें कंपनी ने क्रूरता से दबा दिया।

विद्रोह

- यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति थी।
- यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुआ था, लेकिन अंततः इसने जनता की भागीदारी प्राप्त की।
- यह विद्रोह कई नामों से जाना जाता है: सिपाही विद्रोह (ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा), भारतीय विद्रोह, महान विद्रोह (भारतीय इतिहासकारों द्वारा), 1857 का विद्रोह, भारतीय विद्रोह और स्वतंत्रता संग्राम की पहली जंग (विनायक दामोदर सावरकर द्वारा)।
- चरबी से सने कारतूसों की घटना ने आखिरकार 1857 के विद्रोह को भड़काया।
- अफवाह थी कि नए एनफील्ड राइफल के कारतूसों को गाय और सूअर की चर्बी से चिकनाई दी गई थी।
- सिपाहियों को इन बंदूकों को लोड करने से पहले कारतूसों के कागज को काटकर निकालना पड़ता था। इनसे हिंदू और मुस्लिम दोनों सिपाही नाखुश थे।
- लॉर्ड कैनिंग ने दोषपूर्ण कारतूसों को वापस लेने का प्रयास किया, लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था। कई स्थानों पर दंगे हुए।
- विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुआ, जो दिल्ली से 58 किलोमीटर दूर था, और जल्दी ही एक बड़े क्षेत्र में फैल गया, जिसमें उत्तर में पंजाब, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में बिहार और पश्चिम में राजपुताना शामिल थे।
- मेरठ की त्रासदी से पहले ही कई छावनियों में असंतोष की गूंज उठ रही थी।
- फरवरी 1857 में, **बहरामपुर (पश्चिम बंगाल)** में 19वीं नेटीव इंफैंट्री ने नए आयातित एनफील्ड राइफल का उपयोग करने से इनकार कर दिया और विद्रोह किया, जिसे समाप्त कर दिया गया।

- मंगल पांडे, 34वीं नेटीव इंफेंट्री के एक युवा सिपाही, ने एक कदम और बढ़कर अपने यूनिट के सर्जेंट मेजर को बैरकपुर में गोली मार दी।
- 8 अप्रैल को इनको फांसी पर चढ़ा दिया गया, और उनकी यूनिट को मई में भंग कर दिया गया। फिर मेरठ में विद्रोह हुआ। 24 अप्रैल को 3rd नेटीव कैवेलरी के 90 सिपाहियों ने चिकनाई वाले कारतूसों को नकारा।
- 9 मई को, उनमें से 85 को दोषी ठहराया गया, दस साल की सजा सुनाई गई ।
- इसका परिणाम यह हुआ कि मेरठ में तैनात भारतीय सैनिकों ने एक बड़े विद्रोह में हिस्सा लिया।
- उन्होंने अगले दिन, 10 मई को अपने बंदी बनाए गए साथियों को मुक्त किया, अपने अधिकारियों को फांसी पर चढ़ाया और विद्रोह का ध्वज लहराया। सूर्यास्त के बाद, वे दिल्ली की ओर बढ़ गए।
- चिकनाई से सने कारतूसों ने सेना में असंतोष का एक नया स्रोत नहीं उत्पन्न किया; बल्कि, उन्होंने लंबे समय से सुलग रहे असंतोष को सामने आने का उत्प्रेरक का काम किया।

विद्रोह की प्रकृति

- 1857 का विद्रोह सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुआ, लेकिन अंततः इसमें जनता की भागीदारी प्राप्त हुई।
- वी.डी. सावरकर ने 1857 के विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली जंग कहा।
- डॉ. एस.एन. सेन इसे "धर्म के लिए एक लड़ाई के रूप में शुरू हुआ, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के रूप में समाप्त हुआ" के रूप में वर्णित करते हैं।
- डॉ. आर.सी. मजूमदार इसे न तो पहला, न राष्ट्रीय, न स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं।
- कुछ ब्रिटिश इतिहासकारों के अनुसार, यह केवल एक किसान सिपाही विद्रोह था।

❖ 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण

- 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण 'एनफील्ड' राइफल (चिकनाई से सने कारतूस) थी । इसने सैनिकों को गुस्से में डाल दिया।
- इससे पहले सैनिकों को अपनी राइफलों के साथ गन पाउडर और गोलियां भी ले जानी पड़ती थीं। अफवाह फैली कि नए एनफील्ड राइफलों के कारतूसों को गाय और सूअर की चर्बी से चिकनाई दी गई थी।
- हिंदू और मुस्लिम दोनों सिपाहियों ने इन्हें इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया।
- चूंकि सूअर मुस्लिमों के लिए एक वर्ज्य है और गाय हिंदू धर्म में पवित्र मानी जाती है, सैनिकों ने कारतूसों का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया।
- कंपनी अधिकारियों को अफवाहों के बारे में जानकारी मिली, जब एक उच्च जाति के सिपाही और एक निम्न जाति के श्रमिक के बीच झगड़े की रिपोर्ट आई।
- यह भी अफवाहें थीं कि ब्रिटिश भारतीयों के धर्मों को नष्ट करना चाहते थे और सैनिकों को उनके धार्मिक विश्वासों को तोड़ने के लिए मजबूर कर रहे थे। हालांकि, यह केवल एक कारण नहीं था, क्योंकि इसके अलावा कई अन्य कारण थे जैसे कि सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, जो 1857 के विद्रोह में योगदानकर्ता बने।
- लॉर्ड कैनिंग ने इस गलती को सुधारने की कोशिश की और आपत्तिजनक कारतूसों को वापस ले लिया, लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था। कई स्थानों पर अशांति फैल गई थी।
- मार्च 1857 में, मंगल पांडे, जो बैरकपुर में एक सिपाही थे, ने कारतूस का उपयोग करने से इनकार कर दिया और अपने वरिष्ठ अधिकारियों पर हमला किया। उन्हें 8 अप्रैल को फांसी दे दी गई।
- 9 मई को, मेरठ में 85 सैनिकों ने नई राइफल का उपयोग करने से इनकार किया और उन्हें दस साल की सजा सुनाई गई।

➢ 1857 के विद्रोह के कारण

- समाज के सभी वर्ग, शासकों से लेकर किसानों और व्यापारियों तक, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की विस्तारवादी और साम्राज्यवादी नीतियों से नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए थे। 1857 के विद्रोह का कारण केवल एक विशिष्ट नीति या घटना तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक और सामाजिक-धार्मिक पहलुओं से संबंधित विभिन्न कारण शामिल थे। इन कारणों को संक्षेप में नीचे वर्णित किया गया है,

1. राजनीतिक कारण

- ब्रिटिश ने आक्रामक नीतियां अपनाईं, जैसे कि उपसामरिक गठबंधन और प्रभावी नियंत्रण, और धीरे-धीरे उन्होंने राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया, जिससे शासकों के मन में असंतोष उत्पन्न हुआ।
- मुगल शासक फकीर-उद-दीन की मृत्यु के बाद, लॉर्ड कैनिंग ने घोषणा की कि उत्तराधिकारी राजकुमारों को मुग़ल साम्राज्य के शाही उपाधियों और उनके पुश्तैनी संपत्तियों को छोड़ देना चाहिए। इसने भारतीय मुसलमानों की भावनाओं को आहत किया।
- ब्रिटिश की विस्तारवादी नीति: विद्रोह के राजनीतिक कारणों में ब्रिटिश की विस्तारवादी नीति थी, जिसमें लॉर्ड डलहौजी द्वारा "**डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स**" और सीधी अधिग्रहण की नीति शामिल थी।
- 1840 के दशक के अंत में, लॉर्ड डलहौजी ने "**डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स/ व्यपगत का सिद्धांत**" लागू किया।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा लागू की गई "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" नीति के तहत शासकों के गोद लिए गए बच्चों को

कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया गया और उनकी उत्तराधिकार की अधिकारिता ब्रिटिशों द्वारा तय की गई। इस नीति ने शासकों जैसे नाना साहिब, रानी लक्ष्मीबाई को ब्रिटिश की अन्यायपूर्ण नीतियों के खिलाफ उठ खड़ा किया।

- एक बड़ी संख्या में भारतीय शासक और प्रमुखों को उनके पदों से हटा दिया गया, जिससे अन्य शाही परिवारों में डर फैल गया, जिन्होंने इसी प्रकार के भाग्य का सामना करने का भय व्यक्त किया।
  - रानी लक्ष्मीबाई के गोद लिए हुए बेटे को झाँसी के सिंहासन पर बैठने की अनुमति नहीं दी गई।
  - सतारा, नागपुर और झाँसी को "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" के तहत अधिग्रहित किया गया।
  - जैतपुर, समबालपुर और उदयपुर भी अधिग्रहित किए गए।
  - लॉर्ड डलहौजी द्वारा अवध का अधिग्रहण प्रशासनिक विफलता के बहाने किया गया, जिसके परिणामस्वरूप हजारों नवाबों, अधिकारियों, सैनिकों और नौकरों को बेरोजगार होना पड़ा। इस कदम ने अवध, जो एक वफादार राज्य था, को असंतोष और षड्यंत्र का केंद्र बना दिया।

डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स

- ब्रिटिशों द्वारा लागू की गई प्रमुख नीति, जिसे "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" कहा जाता है, पहली बार लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1840 के दशक के अंत में लागू की गई थी।
- इस नीति में ब्रिटिश शासक ने हिंदू शासकों को बिना स्वाभाविक उत्तराधिकारी के किसी उत्तराधिकारी को गोद लेने से मना कर दिया और शासक की मृत्यु या त्यागपत्र के बाद उनकी भूमि का अधिग्रहण कर लिया।
- इन समस्याओं में ब्राह्मणों का बढ़ता हुआ असंतोष भी शामिल हो गया, जिनमें से कई को उनकी आय से वंचित कर दिया गया था या जिन्होंने लाभकारी पदों को खो दिया था।

2. सामाजिक और धार्मिक कारण

- भारत में तेजी से फैलती पश्चिमी सभ्यता ने पूरे देश में चिंता का कारण बना दिया था।
- 1850 में एक क़ानून ने हिंदू वारिसता के क़ानून में बदलाव किया, जिससे एक हिंदू जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो चुका था, अपनी पुश्तैनी संपत्ति का वारिस बन सकता था।
- लोगों को यह विश्वास हो गया कि सरकार भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने की योजना बना रही है।
- सती प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या जैसी प्रथाओं को समाप्त करने, और विधवा पुनर्विवाह को वैध बनाने वाले कानूनों को स्थापित करना स्थापित सामाजिक संरचना के लिए खतरा माना गया।
- धार्मिक असमर्थता क़ानून को लागू कर, उन्होंने हिंदू रीतियों को बदलने की कोशिश की।
- इसके अतिरिक्त, उन्होंने मूर्तिपूजा की निंदा की, हिंदू देवी-देवताओं का उपहास किया और अंधविश्वासों और प्रथाओं के खिलाफ थे।
- पश्चिमी शिक्षा पद्धतियों को लागू करना हिंदू और मुस्लिम दोनों के लिए धार्मिक रूढ़िवादी सोच को चुनौती देना था।
- यहां तक कि रेलवे और टेलीग्राफ़ की शुरुआत को भी संदेह की दृष्टि से देखा गया।

3. आर्थिक कारण

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा लागू की गई भूमि राजस्व नीतियों के तहत, किसानों से भारी कर वसूल किया गया, जिसके लिए उन्हें साहूकारों और व्यापारियों से ऊंचे ब्याज पर ऋण लेना पड़ा। भुगतान न करने पर, उनके ज़मीनें साहूकारों द्वारा ज़ब्त कर ली जाती थीं, जिससे वे अपनी आजीविका का स्रोत खो बैठते थे।
- ग्रामीण क्षेत्रों में, किसान और ज़मिनदार कंपनी द्वारा भूमि पर लगाए गए भारी करों और राजस्व वसूलने के कड़े तरीकों से नाराज़ थे।
- इन समूहों में से कई भारी राजस्व मांगों को पूरा करने और साहूकारों के ऋण को चुकाने में असमर्थ थे, जिससे वे पीढ़ियों से जो ज़मीनें रखते थे, उसे खो बैठे।
- कई सिपाही किसान वर्ग से थे और उनके गांवों में पारिवारिक संबंध थे, इसलिए किसानों की शिकायतें भी उन्हें प्रभावित करती थीं।
- चूंकि कई भारतीय राज्य ब्रिटिशों द्वारा अधिग्रहित किए गए थे, शासक अब कारीगरों और शिल्पकारों के संरक्षक नहीं रहे, जिससे उन्हें संकट का सामना करना पड़ा।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक नीतियों ने भारतीय उद्योगों और हस्तशिल्पों को नष्ट कर दिया। भारतीय वस्त्रों पर उच्च शुल्क लगाने से, उन्होंने कपास और रेशम के निर्यात को घटा दिया, जो 19वीं सदी के मध्य तक पूरी तरह से समाप्त हो गया।
- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद, ब्रिटिश निर्मित वस्त्रों का भारत में बहाव हुआ, जिसने भारतीय उद्योगों, विशेष रूप से भारतीय वस्त्र उद्योग को बर्बाद कर दिया।
- भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों को ब्रिटेन से आने वाली सस्ती मशीन निर्मित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी।

4. प्रशासनिक कारण

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन न केवल असमर्थ था, बल्कि अपर्याप्त भी था। सर थॉमस मुनरो द्वारा भारतीयों के रोजगार के संबंध में प्रस्तुत की गई सिफारिशों के बावजूद, ब्रिटिशों ने इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया।

- कंपनी के प्रशासन में भ्रष्टाचार व्यापक था, विशेष रूप से पुलिस, छोटे अधिकारियों और अधीनस्थ अदालतों में, जो असंतोष का एक प्रमुख स्रोत था।
- कई इतिहासकार मानते हैं कि भारत में वर्तमान भ्रष्टाचार के स्तर कंपनी के नियंत्रण का परिणाम हैं।
- इसके अलावा, ब्रिटिश शासन की प्रकृति भारतीयों की दृष्टि में दूर और विदेशी दिखाई देती थी

5. सैन्य कारण

- 1857 का विद्रोह एक सिपाही विद्रोह के रूप में शुरू हुआ:
- भारतीय सिपाही भारतीय सेना में ब्रिटिश सैनिकों का 87% से अधिक हिस्सा बनाते थे, लेकिन उन्हें ब्रिटिश सैनिकों से हीन माना जाता था।
- एक भारतीय सिपाही को उसी रैंक के एक यूरोपीय सिपाही से कम वेतन मिलता था। उन्हें अपने घरों से दूर क्षेत्रों में सेवा देने के लिए मजबूर किया गया था।
- 1856 में लॉर्ड कैनिंग ने जनरल सर्विसेस एंनलिस्टमेंट एक्ट जारी किया, जिसके तहत सिपाहियों को ब्रिटिश भूमि में समुद्र पार सेवा देने के लिए तैयार रहना था।
- भारतीय सिपाहियों को किसी भी जाति या संप्रदाय के निशान पहनने से रोका गया था।
- कैनिंग सरकार द्वारा जनरल सर्विस एंनलिस्टमेंट एक्ट पारित होने पर असंतोष था, जिसमें कहा गया था कि बंगाल सेना के भविष्य के भर्ती होने वाले सैनिकों को ब्रिटिश सरकार के अनुसार कहीं भी सेवा देने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- ब्रिटिशों द्वारा पेश की गई एनफील्ड राइफल के कारतूसों को गाय और सूअर की चर्बी से चिकना किया गया था। इससे हिंदू और मुस्लिम दोनों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची। इसे 1857 के विद्रोह का तत्काल कारण माना गया।

लॉर्ड कैनिंग

- चार्ल्स जॉन कैनिंग भारतीय म्यूटिनी 1857 के दौरान भारत के राजनेता और गवर्नर जनरल थे।
- वे 1858 में भारत के पहले वायसरॉय बने।

उनकी अवधि के महत्वपूर्ण घटनाओं में शामिल हैं:

- 1857 का म्यूटिनी, जिसे वे सफलतापूर्वक दबाने में सफल रहे।
- भारतीय काउंसिल्स एक्ट, 1861 का पारित होना, जिसने भारत में पोर्टफोलियो प्रणाली की शुरुआत की।
- "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स/ व्यपगत के सिद्धांत" की वापसी, जो 1858 के म्यूटिनी के मुख्य कारणों में से एक थी।
- क्रिमिनल प्रोसीजर कोड का परिचय।
- इंडियन हाई कोर्ट्स एक्ट का निर्माण।
- इंडियन पेनल कोड (1858)।

6. बाहर की घटनाओं का प्रभाव

- 1857 का विद्रोह पहले अफगान युद्ध (1838-42), पंजाब युद्ध (1845-49) और क्रिमियन युद्ध (1854-56) के दौरान हुआ, जिनमें से सभी ने ब्रिटिशों को बहुत पैसा खर्च करवाया।
- इन घटनाओं का स्पष्ट मानसिक प्रभाव था। ब्रिटिशों को कमजोर समझा जाने लगा था, और यह माना जाने लगा था कि उन्हें पराजित किया जा सकता है।

7. सिपाहियों के बीच असंतोष

- सिपाहियों के धार्मिक विचार और पूर्वाग्रह कंपनी की सेना और छावनियों में ड्यूटी के परिस्थितियों से बढ़ते हुए टकरा गए थे।
- भारतीय सिपाही, जो स्वभाव से आमतौर पर रूढ़िवादी थे, जाति और संप्रदाय के निशान पहनने पर लगी पाबंदी, साथ ही चैपलिनों की धर्मांतरण गतिविधियों की गुप्त अफवाहों को (जो अक्सर कंपनी के खर्चे पर चलती थीं, जिसका मतलब था भारतीयों के खर्चे पर) अपनी धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप मानते थे।
- समुद्र पार करना उस समय के समर्पित हिंदुओं के लिए अपनी जाति को खोने के समान था।
- लॉर्ड कैनिंग के प्रशासन द्वारा 1856 में पारित जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट ने बंगाल सेना में भर्ती होने वाले सभी भविष्य के सैनिकों को यह वचन देने के लिए मजबूर किया कि वे सरकार द्वारा जहां भी उनकी सेवाओं की आवश्यकता हो, वहां सेवा देंगे।
- इसके परिणामस्वरूप शत्रुता का माहौल उत्पन्न हुआ।
- अपने ब्रिटिश सहयोगी के मुकाबले भारतीय सिपाही अपने वेतन से उतने ही असंतुष्ट थे।
- यह आदेश कि उन्हें सिंध या पंजाब में सेवा करने पर विदेशी सेवा भत्ता (भत्ता) नहीं दिया जाएगा, सिपाहियों के लिए असंतोष का एक और तत्काल कारण बना।
- आवध का अधिग्रहण, जो कई सिपाहियों का घर था, ने उनके भावनाओं को और अधिक उग्र कर दिया।
- हर मोड़ पर भारतीय सिपाही को एक दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में व्यवहार किया गया, और उसे जातिवाद और उन्नति और विशेषाधिकारों के मुद्दों में भेदभाव का सामना करना पड़ा।
- सिपाहियों का असंतोष केवल सैन्य समस्याओं तक सीमित नहीं था; यह ब्रिटिश अधिकार के प्रति एक व्यापक असंतोष और शत्रुता की अभिव्यक्ति थी।
- वास्तव में, सिपाही एक "सैनिक वर्दी में किसान" था, जिसका मानसिकता ग्रामीण जनसंख्या से अलग नहीं थी।

8. बहादुर शाह - विद्रोह के नेता

- महान विद्रोह का केंद्र दिल्ली जल्द ही बन जाएगा, और बहादुर शाह इसका प्रतीक होंगे।
- भारत के अंतिम मुग़ल सम्राट को भारतीय सिंहासन पर स्वीकृति मिलना यह संकेत था कि मुग़ल वंश का लंबा

- ब्रिटिश इतिहासकारों का मानना था कि सिपाहियों और कुछ जमींदारों और राजाओं ने अपने स्वार्थी हितों के लिए विद्रोह की योजना बनाई, स्थानीय लोगों की चिंताओं और आंदोलन में उनकी भागीदारी को नजरअंदाज करते हुए।
- 1857 के एक हालिया अध्ययन के अनुसार, स्वार्थी कारणों ने ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ संगठित विरोध से पहले महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई।
- 1857 का विद्रोह कुछ इतिहासकारों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता के पहले संघर्ष के रूप में माना जाता है।
- जो लोग इस दृष्टिकोण से असहमत हैं, उनका कहना है कि विद्रोही नेताओं ने एक नया सामाजिक व्यवस्था बनाने की कोशिश नहीं की।
- असंतुष्ट आस्था और इरादे टूट गए, और वे अक्सर उस समाज और नीतियों की ओर देख रहे थे जो अब व्यावहारिक नहीं थीं। परिणामस्वरूप, यह एक क्रांति की बजाय एक पुनर्स्थापना थी।
- ग्रामीण किसान, सिपाहियों और तालुकदारों के अलावा, विद्रोह में पर्याप्त संख्या में शामिल हुए।
- आवध के मामले में, यह दिखाया गया है कि यह हमला तालुकदारों और किसानों ने मिलकर किया था।
- किसान तालुकदारों के ब्रिटिशों से शांति बनाने के बाद भी स्थानों से स्थानांतरित होते रहे।
- सिपाहियों के रिश्तेदार ग्रामीण इलाकों में थे, और उनके विद्रोह ने नागरिकों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी चिंताएं व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।
- इसके परिणामस्वरूप, 1857 का विद्रोह एक लोकप्रिय विद्रोह के रूप में सामने आया।

➢ विद्रोह का महत्व

- हालाँकि ब्रिटिशों ने विद्रोह को दबा दिया, वे लोगों के असंतोष की तीव्रता को महसूस कर रहे थे।
- 1857 की घटनाओं ने ब्रिटिशों को विद्रोह के बाद भारत के प्रति अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने पर मजबूर किया; परिणामस्वरूप, उन्होंने भविष्य में विद्रोहों को रोकने के लिए एक योजना बनाई।
- ब्रिटिशों ने यह वादा किया कि वे स्थानीय राजाओं का विश्वास फिर से प्राप्त करने के लिए अपने मौजूदा भौगोलिक विजय का विस्तार नहीं करेंगे।
- वफादार राजाओं को विशेष सम्मान मिला। सैनिकों के बीच सामूहिकता बनाए रखने के लिए, सेना की भर्ती के दौरान समुदाय, जाति, जनजाति और क्षेत्रीय निष्ठा को बढ़ावा दिया गया।
- भारतीयों की जाति, धर्म, और क्षेत्रीय पहचान का सूक्ष्मता से शोषण करते हुए, ब्रिटिशों ने 'बांटो और राज करो' की नीति अपनाई।
- 1858 में रॉयल प्रोक्लेमेशन की घोषणा 1857 के विद्रोह का एक और महत्वपूर्ण परिणाम था।
- इस घोषणा के साथ ब्रिटिश क्राउन ने भारत सरकार पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त किया, जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया।
- हालाँकि विद्रोहियों को पराजित कर दिया गया, उनकी ब्रिटिश राज के खिलाफ वीरतापूर्वक की गई लड़ाई ने जनता पर स्थायी प्रभाव डाला।
- इस विद्रोह का भारतीय राष्ट्रवाद की भावना पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, विशेष रूप से उन्नीसवीं सदी के दूसरे भाग में इसके गठन के वर्षों के दौरान।

हिंदू-मुस्लिम एकता

- विद्रोह के सभी स्तरों - लोगों, सैनिकों और नेताओं में - हिंदुओं और मुसलमानों के बीच पूर्ण सहयोग था।
- सभी विद्रोहियों ने एक मुस्लिम बहादुर शाह जफर को सम्राट के रूप में मान्यता दी, और मेरठ में हिंदू सिपाहियों ने तुरंत मुगल शाही राजधानी दिल्ली की ओर मार्च करना शुरू कर दिया।
- मौलाना आज़ाद लिखते हैं, "1857 के विद्रोह की जटिल कहानी के बीच दो बातें स्पष्ट रूप से सामने आती हैं।"
- पहला उस समय भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच मौजूद एकता की अविश्वसनीय भावना है।
- दूसरा मुगल क्राउन के प्रति लोगों की महान भक्ति है।" हिंदू और मुस्लिम दोनों, विद्रोहियों और सिपाहियों ने एक-दूसरे की भावनाओं को स्वीकार किया।
- एक बार जब किसी दिए गए स्थान पर विद्रोह सफल हो गया, तो गोहत्या पर तत्काल प्रतिबंध लगा दिया गया।
- नेतृत्व में हिंदू और मुस्लिम दोनों का अच्छा प्रतिनिधित्व था; उदाहरण के लिए, नाना साहेब के सलाहकार के रूप में अजीमुल्ला, एक मुस्लिम थे जो राजनीतिक विज्ञापन में विशेषज्ञ थे, जबकि लक्ष्मीबाई के पक्ष में अफगान योद्धा थे।
- इस प्रकार, 1857 की घटनाओं से पता चला कि, 1858 से पहले, भारत के लोग और राजनीति मौलिक रूप से सांप्रदायिक या सांप्रदायिक नहीं थे।

समकालीन घटनाओं का प्रभाव

- प्रथम अफगान युद्ध (1838-42)
- पंजाब युद्ध (1845-49)
- क्रीमियन युद्ध (1854-56)
- संथाल विद्रोह (1855-57)

1857 के विद्रोह के ऐतिहासिक आंदोलन

1857 के विद्रोह के दौरान कई ऐतिहासिक आंदोलन हुए जो आज भी हमारी स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बात करते समय बातचीत के केंद्र हैं।

मंगल पांडे - मंगल पांडे ने न केवल गाय या सुअर की चर्बी से चिकनाई वाले कारतूसों का उपयोग करने से इनकार किया, बल्कि उन्होंने अपनी इन्फैंट्री के भीतर एक हंगामा खड़ा कर दिया जिससे ब्रिटिश जनरलों का नुकसान

हुआ । उनकी बहादुरी आज तक बेजोड़ है, हालाँकि उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा फांसी दे दी गई थी।

कानपुर हत्याकांड -

कानपुर या कानपुर 1857 के विद्रोह का मुख्य आकर्षण था। जब सिपाहियों द्वारा कानपुर को घेर लिया गया, तो उन्होंने ब्रिटिश बचाव दल को कानपुर के रास्ते इलाहाबाद जाने की अनुमति दी। लेकिन ब्रिटिश सैनिकों और नागरिकों (जिनमें 120 महिलाएं और बच्चे शामिल थे) को सिपाहियों ने मार डाला। इसने ईस्ट इंडिया कंपनी को क्रुद्ध कर दिया, जिसने भारतीय नागरिकों को प्रताड़ित किया, लूटा और कानपुर में बड़ी संख्या में सिपाहियों को मार डाला और शहर पर फिर से कब्जा कर लिया।

झाँसी की रानी की ऐतिहासिक जीत -

रानी लक्ष्मीबाई ने ईस्ट इंडिया कंपनी को झाँसी पर कब्जा करने से इनकार कर दिया। तब ब्रिटिश सेनाएँ धीरे-धीरे झाँसी की ओर बढ़ीं। यह रात के अंधेरे में था कि विद्रोहियों ने उस किले पर हमला किया जहाँ ब्रिटिश नेता और उनके नौकर आराम कर रहे थे और उन सभी को मार डाला।

कालानुक्रमिक क्रम में 1857 के विद्रोह का मार्ग

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भारतीय सिपाहियों के बीच सुलगते असंतोष को उन चिकनाई वाले कारतूसों का उपयोग करने के आदेश से और बढ़ावा मिला। सिपाहियों ने चिकनाई वाले कारतूसों का उपयोग करने से इनकार कर दिया। इसे ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा अवज्ञा का कार्य माना गया और उन्होंने सिपाहियों के लिए कठोर दंड देना शुरू कर दिया। इस प्रकार 1857 के विद्रोह की शुरुआत हुई।

तारीख	घटनाएँ
2 फरवरी 1857	बरहामपुर में 19वीं नेटीव इन्फैंट्री ने एनफील्ड राइफल का उपयोग करने से इनकार किया, और विद्रोह हुआ। जल्द ही उनका दमन कर दिया गया।
8 अप्रैल 1857	मंगल पांडे, 34वीं नेटीव इन्फैंट्री के सिपाही को मेजर सर्जेंट पर गोली चलाने के लिए फांसी दी गई और 34वीं नेटीव इन्फैंट्री को विघटित (भंग) कर दिया गया।
10 मई 1857	मेरठ में विद्रोह शुरू हुआ।
11 से 30 मई 1857	बहादुर शाह ज़फर को भारत का सम्राट घोषित किया गया। धीरे-धीरे विद्रोह दिल्ली, बंबई, अलीगढ़, फिरोज़पुर, बुलंदशहर, एटा, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहाँपुर और उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर फैल गया।
जून 1857	ग्वालियर, झांसी, इलाहाबाद, फैज़ाबाद, लखनऊ, भरतपुर आदि में विद्रोह हुआ।
जुलाई और अगस्त 1857	इंदौर, महू, नर्मदा जिलों और पंजाब के कुछ स्थानों पर विद्रोह हुआ।
सितंबर 1857	• दिल्ली को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने फिर से कब्जा कर लिया।
नवंबर 1857	• जनरल विंधम को कांपोर के बाहर विद्रोहियों ने हराया।
दिसंबर 1857	• कांपोर की लड़ाई में सर कॉलिन कैम्पबेल ने जीत हासिल की।
मार्च 1858	• लखनऊ को ब्रिटिशों ने पुनः कब्जा किया।
अप्रैल 1858	• झांसी को ब्रिटिशों ने रानी लक्ष्मीबाई से लड़कर कब्जा किया।
मई 1858	• बरेली, कालपी और जगदीशपुर को ब्रिटिशों ने पुनः कब्जा किया।
जुलाई से दिसंबर 1858	• धीरे-धीरे भारत में ब्रिटिश शासन फिर से स्थापित हो गया।

❖ 1857 के विद्रोह के केंद्र और दमन

निम्नलिखित तालिका में 1857 के विद्रोह के प्रमुख केंद्र, उन केंद्रों पर विद्रोह का नेतृत्व करने वाले नेता और विद्रोह को दबाने वाले ब्रिटिश जनरल्स की सूची दी गई है।

केंद्र	विद्रोह नेता	ब्रिटिश जनरल
दिल्ली	जनरल बख्त खान	लेफ्टिनेंट विलॉघबी, जॉन निकोलसन और लेफ्टिनेंट हडसन
कानपूर	नाना साहेब	सर ह्यू व्हीलर और सर कॉलिन कैम्पबेल
लखनऊ	बेगम हज़रत महल	हेनरी लॉरेन्स, ब्रिगेडियर इंग्लिस, हेनरी हैवलॉक, जेम्स आउट्राम और सर कॉलिन कैम्पबेल
बरेली	खान बहादुर	जेम्स आउट्राम
बिहार	कुँवर सिंह	सर कॉलिन कैम्पबेल
फैज़ाबाद	मौलवी अहमदुल्लाह	सर कॉलिन कैम्पबेल
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	सर ह्यू रोज़

➢ 1857 के विद्रोह का प्रभाव

- 1858 के "गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट" के तहत भारत के मामलों पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और क्राउन के बीच का द्वैध शासन समाप्त हो गया और भारतीय प्रशासन पर

हालांकि 18 में से 15 प्रांतीय कांग्रेस समितियों ने नेहरू को अधिवेशन का अध्यक्ष बनाने के खिलाफ मतदान किया था, गांधीजी ने नेहरू का समर्थन किया, और उन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। गांधी का निर्णय नेहरू द्वारा पूर्ण स्वराज की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने के प्रयासों का परिणाम था। अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य **पूर्ण स्वराज** को कांग्रेस का लक्ष्य स्वीकार करना था।

नेहरू के भाषण में मुख्य बातें:

1. **पूर्ण स्वतंत्रता** को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया गया।
2. स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग **शांतिपूर्ण साधनों** से होना चाहिए।
3. केवल विदेशी शासन से मुक्ति ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के बाद एक **समाजवादी प्रणाली** को अपनाने का भी प्रस्ताव रखा।

लाहौर अधिवेशन में लिए गए प्रमुख निर्णय:

1. **गोलमेज सम्मेलन (RTC)** का बहिष्कार किया जाएगा।
2. कांग्रेस का लक्ष्य **पूर्ण स्वतंत्रता** घोषित किया गया।
3. कांग्रेस कार्यकारिणी समिति (CWC) को **सविनय अवज्ञा आंदोलन** (नागरिक अवज्ञा) शुरू करने का अधिकार दिया गया, जिसमें कर न चुकाने जैसे उपाय शामिल थे।
4. सभी विधायकों से अपनी सदस्यता से इस्तीफा देने का आह्वान किया गया।
5. **26 जनवरी, 1930** को पहला **स्वतंत्रता दिवस** घोषित कर इसे पूरे देश में मनाने का निर्णय लिया गया।
6. **तिरंगा झंडा** को अपनाया गया और फहराया गया।
7. यह प्रतिज्ञा ली गई कि ब्रिटिश शासन के प्रति अब और अधिक आज्ञाकारी रहना मानव और ईश्वर के प्रति अपराध है।

लाहौर अधिवेशन ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक स्पष्ट और निर्णायक दिशा दी और **सविनय अवज्ञा आंदोलन** की नींव रखी।

अध्याय – 26

गांधीजी का जन आंदोलन का प्रयोग (भाग II)

सविनय अवज्ञा आंदोलन

1929 में कांग्रेस के **लाहौर अधिवेशन** में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की घोषणा की गई, और इसे समन्वित करने की जिम्मेदारी **महात्मा गांधी** को सौंपी गई। आंदोलन की शुरुआत 12 मार्च 1930 को प्रसिद्ध **दांडी मार्च** से हुई। गांधीजी ने 6 अप्रैल 1930 को **मुट्ठीभर नमक उठाकर नमक कानून** तोड़ा।

➢ दांडी मार्च और नमक कानून तोड़ना

1930 में स्वतंत्रता दिवस मनाने के बाद, गांधीजी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

- 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने 78 सत्याग्रहियों के साथ साबरमती आश्रम, अहमदाबाद से 385 किलोमीटर दूर समुद्रतटीय गांव दांडी के लिए पदयात्रा शुरू की।
- 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचने के बाद, गांधीजी ने समुद्र के जल के वाष्पीकरण से बने नमक को उठाकर ब्रिटिश सरकार के नमक कानून का उल्लंघन किया।
- यह आंदोलन सरकार के विरुद्ध जनता के प्रतिरोध का प्रतीक बन गया और पूरे देश में फैल गया।

तमिलनाडु में सी. राजगोपालाचारी ने त्रिची से वेदरनयम तक गांधीजी के दांडी मार्च के समान एक यात्रा निकाली। गुजरात के धरसाना में, सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में सत्याग्रहियों ने सरकारी नमक गोदामों पर मार्च किया। पुलिस के बर्बर लाठीचार्ज में 300 से अधिक सत्याग्रही गंभीर रूप से घायल हुए और दो की मृत्यु हो गई।

आंदोलन के मुख्य कार्य और प्रभाव:

1. **प्रदर्शन और हड़तालें:** जगह-जगह विरोध प्रदर्शन और हड़तालें हुईं।
2. **विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार:** ब्रिटिश कपड़ों और उत्पादों का सार्वजनिक बहिष्कार किया गया।
3. **कर चुकाने से इंकार:** आंदोलन के अगले चरण में करों का भुगतान न करने की अपील की गई।
4. **महिलाओं की भागीदारी:** लाखों लोग, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं, इस आंदोलन में शामिल हुए।

➢ पहला गोलमेज सम्मेलन (1930)

- नवंबर 1930 में ब्रिटिश सरकार ने **पहला गोलमेज सम्मेलन** आयोजित किया।
- इसका उद्देश्य साइमन कमीशन द्वारा प्रस्तावित सुधारों पर विचार करना था।
- **कांग्रेस** ने, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही थी, इस सम्मेलन का **बहिष्कार** किया।
- हालांकि, सम्मेलन में **भारतीय राजाओं, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा**, और कुछ अन्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

- लेकिन इस सम्मेलन से कोई ठोस नतीजा नहीं निकला।

ब्रिटिश सरकार को यह समझ आ गया कि **कांग्रेस की भागीदारी के बिना** भारत में संवैधानिक परिवर्तन के किसी भी निर्णय को भारतीय जनता स्वीकार नहीं करेगी। यह आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण चरण था, जिसने ब्रिटिश सरकार पर भारी दबाव बनाया।

➢ **1931 की शुरुआत और गांधी-इरविन समझौता**

1931 की शुरुआत में, वायसराय इरविन ने कांग्रेस को दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल करने के प्रयास किए।

- **गांधी और इरविन के बीच एक समझौता** हुआ, जिसमें सरकार ने सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर सहमति व्यक्त की, जिन पर हिंसा के आरोप नहीं थे।
- बदले में, कांग्रेस ने **सविनय अवज्ञा आंदोलन** को निलंबित करने का निर्णय लिया।
- हालांकि, कई राष्ट्रवादी नेता इस समझौते से **असंतुष्ट** थे।

कराची अधिवेशन (मार्च 1931)

- कराची में मार्च 1931 में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता **वल्लभभाई पटेल** ने की।
- कांग्रेस ने गांधी-इरविन समझौते को मंजूरी दी और **दूसरे गोलमेज सम्मेलन** में भाग लेने का निर्णय लिया।
- गांधी को इस सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। सम्मेलन **सितंबर 1931** में आयोजित हुआ।

कराची अधिवेशन के महत्वपूर्ण निर्णय:

1. **मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति** पर एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया गया।
2. यह प्रस्ताव भारत के सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर राष्ट्रीय आंदोलन की नीति को दर्शाता है।
3. इसमें सभी नागरिकों को **जाति और धर्म के भेदभाव के बिना मौलिक अधिकारों** की गारंटी देने की बात कही गई।
4. प्रमुख उद्योगों के **राष्ट्रीयकरण**, भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने, और मजदूरों और किसानों के कल्याण के लिए योजनाएं बनाने का समर्थन किया गया।
5. यह प्रस्ताव राष्ट्रीय आंदोलन पर **समाजवादी आदर्शों के बढ़ते प्रभाव** को दर्शाता है।

➢ **दूसरा गोलमेज सम्मेलन और उसका परिणाम**

- गांधी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि थे, जिन्होंने पूरे देश का प्रतिनिधित्व किया।
- अन्य भारतीय प्रतिनिधियों में **भारतीय राजाओं, हिंदू, मुस्लिम और सिख सांप्रदायिक नेताओं** ने भाग लिया।
- ये नेता ब्रिटिश सरकार के हाथों की कठपुतली बन गए। **राजाओं** का मुख्य उद्देश्य अपने शासकीय पद को सुरक्षित रखना था। **सांप्रदायिक नेता**, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने चुना था, केवल अपनी-अपनी समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे, न कि पूरे देश का।
- न तो राजाओं और न ही सांप्रदायिक नेताओं को भारत की स्वतंत्रता में रुचि थी।
- परिणामस्वरूप, **दूसरा गोलमेज सम्मेलन विफल** रहा।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का पुनरारंभ और दमन

- गांधी भारत लौटे और **सविनय अवज्ञा आंदोलन** को फिर से शुरू किया।
- सम्मेलन के दौरान भी सरकार का दमन जारी रहा और आंदोलन के पुनरारंभ के बाद इसे और तेज कर दिया गया।
- गांधी और अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- **लगभग एक वर्ष में 1,20,000 लोगों को जेल में डाला गया।**

➢ **आंदोलन की समाप्ति (1934):**

- आंदोलन 1934 में वापस ले लिया गया।
- कांग्रेस ने 1934 में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया, जिसमें **व्यस्क मताधिकार** के आधार पर चुनी गई **संविधान सभा** बुलाने की मांग की।
- कांग्रेस ने घोषणा की कि केवल ऐसी सभा ही भारत का संविधान बना सकती है।
- यह स्पष्ट किया गया कि केवल जनता को यह अधिकार है कि वह यह तय करे कि किस प्रकार की सरकार के अधीन वह जीना चाहती है।

आंदोलन का महत्व और प्रभाव

- **हालांकि कांग्रेस अपने उद्देश्य को पूरा करने में विफल रही**, लेकिन उसने देश में दूसरी बार एक बड़े जन आंदोलन में लोगों के बड़े हिस्से को संगठित किया।
- इसने भारतीय समाज के **पुनर्निर्माण के लिए क्रांतिकारी उद्देश्यों** को अपनाया और स्वतंत्रता संग्राम में समाजवाद को अधिक प्रमुखता दी।

गांधीजी की ग्यारह मांगें और 31 जनवरी 1930 का अल्टीमेटम

महात्मा गांधी ने 31 जनवरी 1930 को वायसराय लॉर्ड इरविन को ग्यारह मांगें प्रस्तुत कीं और उनका पालन न करने पर आंदोलन का अल्टीमेटम दिया।

➢ **गांधीजी की ग्यारह मांगें:**

1. **शराब और नशीले पदार्थों** पर प्रतिबंध लगाया जाए।
2. नागरिकों को आत्मरक्षा के लिए **हथियारों के लाइसेंस** जारी किए जाएं।
3. **रुपए और स्टर्लिंग** के बीच विनिमय दर को बदला जाए।
4. **सभी राजनीतिक कैदियों** को रिहा किया जाए।
5. **भूमि राजस्व की दर** को कम किया जाए।
6. **गुप्तचर विभाग (CID)** को समाप्त किया जाए।
7. **सैन्य खर्च** को कम किया जाए।
8. **डाक आरक्षण विधेयक** को स्वीकार किया जाए।
9. **नमक कर** को समाप्त किया जाए।

10. विदेशी कपड़ों पर **आयात शुल्क** लगाया जाए।
11. **नागरिक प्रशासन पर खर्च** को कम किया जाए।

नमक को आंदोलन का प्रतीक क्यों चुना गया ?

- **नमक सत्याग्रह** केवल नमक कानून तोड़ने का प्रतीकात्मक कार्य नहीं था। यह भारतीय जनता के ब्रिटिश शासन के अधीन न रहने के संकल्प का प्रतीक था।
- यह एक ऐसा मुद्दा था जो **सभी वर्गों** को प्रभावित करता था और इसने जनता को व्यापक रूप से संगठित किया।
- नमक कानून ने ब्रिटिश शासन के सबसे क्रूर और शोषणकारी चेहरे को उजागर किया, क्योंकि नमक जैसी बुनियादी आवश्यकता पर कर लगाना अन्यायपूर्ण था।
- गांधीजी ने **आत्मनिर्भरता** पर जोर दिया और गरीब समुदायों को नमक बनाने के माध्यम से आय अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

आंदोलन ने कैसे गति पकड़ी ?

- **नमक कानून** तोड़ने की शुरुआत के बाद यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया।
- नमक कानून का उल्लंघन करने के साथ-साथ **जंगल कानून** का विरोध, **चौकीदारी कर** का न भुगतान और **भूमि राजस्व** का विरोध किया गया।
- जगह-जगह हड़तालें, विरोध प्रदर्शन और विदेशी उत्पादों का बहिष्कार शुरू हो गया।

➢ **<u>प्रमुख घटनाएं:</u>**

1. गांधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ने के बाद, पूरे देश में इसी प्रकार के मार्च और विरोध प्रदर्शन हुए। **तमिलनाडु** में सी. राजगोपालाचारी ने **तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम** तक नमक मार्च का नेतृत्व किया।**असम** में सत्याग्रहियों ने सिलहट से नोआखाली तक मार्च किया।
2. 4 मई 1930 को **जवाहरलाल नेहरू** और बाद में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया।
3. **पेशावर** में आंदोलन का नेतृत्व **खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गांधी)** ने किया। उन्होंने **खुदाई खिदमतगार** (लाल कुर्ते) संगठन की स्थापना की। गढ़वाल रेजिमेंट के दो सैनिकों ने **गैर-हिंसक प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया**, भले ही इसके लिए उन्हें कोर्ट मार्शल और लंबी सजा का सामना करना पड़ा। यह घटना दिखाती है कि राष्ट्रवाद ने भारतीय सेना में भी प्रवेश करना शुरू कर दिया था।
4. गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद: **सोलापुर** में टेक्सटाइल मजदूरों ने ब्रिटिश प्रतीकों पर हमला किया और समानांतर सरकार बनाई। **सरोजिनी नायडू** ने गांधीजी की अनुपस्थिति में धरसाना के नमक डिपो पर छापेमारी का नेतृत्व किया। **गुजरात और संयुक्त प्रांतों** में यह आंदोलन **राजस्व न भुगतान अभियान** का रूप ले लिया। **कर्नाटक और मध्य प्रांतों** में जंगल कानूनों का उल्लंघन किया गया। **नागालैंड** में रानी गाइदिनल्यू ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।

<u>आंदोलन का महत्व</u>

नमक सत्याग्रह केवल ब्रिटिश कानून के उल्लंघन का प्रतीक नहीं था; यह भारत की स्वतंत्रता के लिए **सामूहिक संकल्प और जनता के व्यापक संगठित विरोध** का प्रमाण था। इसने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आंदोलन में कौन शामिल हुआ ?

सविनय अवज्ञा आंदोलन में विभिन्न वर्गों और समूहों ने भाग लिया:

1. **महिलाएं** - बड़ी संख्या में महिलाओं ने आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्होंने शराब की दुकानों और विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया।
2. **छात्र और युवा** - छात्रों और युवाओं की भागीदारी भी महत्वपूर्ण रही।
3. **व्यापारी और व्यापारी वर्ग** - व्यापारियों और दुकानदारों ने भी भाग लिया क्योंकि उन्हें विदेशी उत्पादों के खिलाफ सुरक्षा की आवश्यकता थी।
4. **श्रमिक** - बंबई, शोलापुर, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों में श्रमिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
5. **मुस्लिम समुदाय** - मुस्लिमों की भागीदारी **सविनय अवज्ञा आंदोलन** में अपेक्षाकृत कम थी, जो ब्रिटिश सरकार की **'फूट डालो और राज करो'** नीति का परिणाम था। हालांकि, **उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत, ढाका, बिहार और लखनऊ** जैसे क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय ने अच्छी संख्या में भाग लिया।

<u>ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया:</u>

आंदोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कठोर दमन का सहारा लिया:

- कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार किया गया।
- कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया।
- कठोर कानून लागू किए गए, जिससे **नागरिक अधिकार** और **मीडिया की स्वतंत्रता** को कुचला गया।
- शांतिपूर्ण और गैर-हिंसक भीड़ पर **लाठीचार्ज** और गोलीबारी की गई।

<u>सरकार द्वारा समझौते के प्रयास:</u>

1. **गोलमेज सम्मेलन का प्रस्ताव** - वायसराय **लॉर्ड इरविन** ने डोमिनियन स्टेटस के वादे के साथ गोलमेज सम्मेलन का प्रस्ताव दिया। **तेज बहादुर सप्रू** और **एम.आर. जयकर** को कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के बीच मतभेद सुलझाने के लिए नियुक्त किया गया।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/6bx90g 1 web.- https://shorturl.at/SgSVX

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
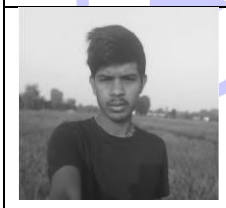	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE

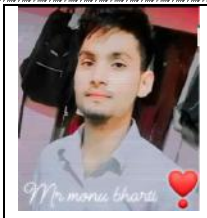	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
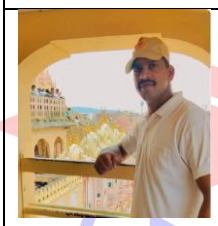	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/6bx90g

Online Order करें - https://shorturl.at/5gSVX

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO